जनवरी–जून (2021)

बैंक ज्योति

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर

छमाही पत्रिका

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 71वीं छमाही बैठक

बैंक नराकास, जयपुर की 71वीं अर्द्धधवार्षिक बैठक एम एस टीम्स के माध्यम से दिनांक 29 जनवरी 2021 को श्री महेंद्र एस. महनोत, अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, बैंक नराकास, जयपुर की अध्यक्षता, श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक, जयपुर, एवं श्री नरेंद्र मेहरा, सहा.निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली के विशेष मार्गदर्शन में आयोजित की गई । उक्त बैठक में विशेष रूप से श्री कुलदीप सिंह, महाप्रबंधक, नाबार्ड, श्री बलवीर सिंह, महाप्रबंधक, सिडबी, श्री योगेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर, श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा एवं अन्य सभी सार्वजनिक बैंकों के कार्यालय प्रमुख एवं उनके राजभाषा प्रभारी उपस्थित रहे। उक्त बैठक में बैंक नराकास, जयपुर द्वारा वार्षिक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2020 के विजेता कार्यालयों को अध्यक्ष महोदय के कर कमलों द्वारा शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

बैंक नराकास जयपुर द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों हेतु त्वरित अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 06.01.2021 को बैंक नराकास, जयपुर द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों एवं अनुवाद कार्य से जुड़े अन्य स्टाफ सदस्यों हेतु बैंकिंग क्षेत्र में परिभाषिक शब्दावली का महत्व और दैनिक प्रयोग की अभिव्यक्ति विषय पर आधारित – त्वरित अनुवाद प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । उक्त कार्यक्रम संयुक्त सचिव महोदया डॉ मीनाक्षी जौली की विशिष्ट उपस्थिति एवं मार्गदर्शन में आयोजित किया गया । कार्यक्रम में सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यपालकगण, राजभाषा अधिकारी एवं अन्य अधिकारियों ने भाग लिया । कार्यक्रम के दौरान श्री महेंद्र सिंह महनोत, अध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर, श्री योगेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर, श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री मोहनलाल वाधवानी, निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, श्री विनोद संदलेश, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, श्री सतीश कुमार पांडे, पूर्व उप निदेशक एवं सलाहकार, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ । उक्त कार्यक्रम में प्रधान कार्यालय, बड़ौदा द्वारा समिति के कार्यपद्धति की सराहना करते हुए श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहा.महाप्रबंधक (राजभाषा) सभी को संबोधित किया गया । श्री सतीश कुमार पांडे, पूर्व उप निदेशक एवं सलाहकार द्वारा दैनिक बैंकिंग पत्राचार में प्रयोग होने वाले पारिभाषिक शब्दावली, वाक्यांशों एवं सरल अनुवाद पद्धति के विषय में जानकारी दी गई। अंत में श्री योगेश अग्रवाल ,उपाध्यक्ष, बैंक नराकास द्वारा विधिवत सभी का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम संपन्न किया गया ।

बैंक नराकास, जयपुर की छमाही पत्रिका

बैंक ज्योति

जनवरी-जून (2021)

अध्यक्ष :
महेन्द्र सिंह महनोत
अध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर एवं
महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जयपुर अंचल

सदस्य सचिव :
सोमेन्द्र यादव
सदस्य सचिव, बैंक नराकास, जयपुर एवं
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जयपुर अंचल

अध्यक्ष, प्रकाशन उप समिति
संतोष कुमार बंसल
उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जयपुर क्षेत्र

संपादन सहयोग
जयपाल सिंह शेखावत
संयोजक, प्रकाशन उप समिति एवं
वरि. प्रबंधक (राजभाषा) बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

संध्या चौधरी
उप-महाप्रबंधक (राजभाषा)
राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, नाबार्ड, जयपुर

अन्नु शर्मा
प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

ललित कुमार जांगिड़
प्रबंधक (राजभाषा)
केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

अर्चना पुरोहित
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

संपर्क :
बैंक ऑफ बड़ौदा
अंचल कार्यालय, बड़ौदा भवन,
13, एयरपोर्ट प्लाजा, टोंक रोड, जयपुर
दूरभाष : 0141-2727130
ईमेल : banktolicjaipur@gmail.com
www.banktolicjaipur.com

इस अंक में

मुख्य पृष्ठ	पृष्ठ संख्या
आंतरिक कवर : बैंक नराकास की 71वीं छःमाही बैठक एवं त्वरित अनुवाद कार्यक्रम	
अनुक्रमणिका	01
अध्यक्ष की कलम से	02
अध्यक्ष (प्रकाशन उप-समिति का संदेश)	03
सदस्य सचिव के शब्द	04
आलेख – डोरस्टेप बैंकिंग	05
नराकास आयोजन	06
बैंकों का निजीकरण	07
नई शिक्षा नीति में मातृभाषा का महत्व	08–09
सदस्य बैंको की गतिविधियाँ	10–14
विचार सुगंध – किसी भी काम को बाद के लिये ना छोड़ें	15
जलवायु संकट के समाधान के लिए वैश्विक पहल और प्रतिबद्धता	16–18
सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ	19–21
आलेख : वित्तीय समावेशन / कविता : कहना जरूर	22–23
प्रेरक व्यक्तित्व : पन्नाधाय एवं वीर दुर्गादास	24
खेल-खिलाड़ी (ओलम्पिक विशेष)	25
सम-सामयिक आलेख – ऑनलाइन शिक्षा : जरूरी या मजबूरी	26
अतुल्य राजस्थान : राजस्थान के अभयारण्य	27
उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम – 2019	28–29
कविता : कहाँ गया वो बचपन सुहाना	29
साहित्यिक विरासत : राजस्थानी महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण / कविता समामेलन	30–31
काव्य – सरिता :	32
क्या आपको सच में अपनों से प्यार है	33
भारतीय गीतकारी का नया अर्श – मनोज 'मुन्तशिर'	34
साहित्य निर्झर – 18	35
सदस्य बैंकों के संपर्क विवरण	36
आंतरिक कवर : बैंक नराकास जयपुर की उप-समितियों की बैठक	

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त लेखकों के विचारों से समिति का सहमत होना जरूरी नहीं है।

श्री सोमेन्द्र यादव, सदस्य सचिव, बैंक नराकास एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा प्रकाशित एवं राजस्थान कलर स्कैनर, जयपुर द्वारा मुद्रित (केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

अध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय साथियो,

नमस्कार,
एक बार फिर मुझे हमारी नराकास की पत्रिका "बैंक ज्योति" के माध्यम से आप सभी से संवाद करने का सुखद अवसर प्राप्त हो रहा है। यह गर्व का विषय है कि विगत छमाही में कोविड –19 के कष्टकारी माहौल में भी न केवल बैंकिंग उद्योग ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन जारी रखा, अपितु हमारी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की गतिविधियाँ यथा समय निरंतर रूप से जारी रहीं । ये सब कार्य समिति के सभी सदस्य कार्यालयों के सक्रिय सहयोग से ही संभव हो पाया है । इस आशय हेतु मैं सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रभारियों को बधाई देता हूँ । हमें इस क्रम को आगामी समय में भी जारी रखना है । मेरा सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध है कि समिति की गतिविधियों में प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त विविध बैंकिंग विषयों पर वेबिनार, ई–संगोष्ठियों के आयोजनों को भी स्थान दें ताकि हम राजभाषा कार्यान्वयन के मूल मंत्र प्रेरणा व प्रोत्साहन के लक्ष्य की पूर्ति के साथ–साथ विभिन्न विषयों पर ज्ञान की प्राप्ति भी कर सकें ।

हमारे बैंक ने उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के मद्देनज़र अखिल भारतीय स्तर पर हमारे विभिन्न श्रेणियों के कार्यालयों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों हेतु मानदंडों का निर्धारण किया है, जिस आधार पर मासिक स्तर पर कार्य किए जाने हैं । मेरा आप सभी से आग्रह है कि इन मानकों को ध्यान रखते हुए समिति की गतिविधियों का यथा समय निष्पादन करें ।

महात्मा गांधी की यह उक्ति आज भी प्रासंगिक हैं कि " गौरव लक्ष्य पाने के लिए कोशिश करने में है, न कि लक्ष्य तक पहुँचने में "। हमें इस बात को आत्मसात करते हुए अपनी समिति को अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान पर विराजित करने हेतु पूरे मनोयोग व कठोर श्रम के साथ कार्य करना है । मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी के पूर्ण सहयोग से हम हर स्तर पर सफल होंगे ।

अंत में मैं, छमाही के दौरान आयोजित सभी गतिविधियों के सफल आयोजन करने वाले सदस्य कार्यालयों, सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों एवं हमारी नराकास की विभिन्न उप समितियों का अभिनंदन करता हूँ, जिनके सक्रिय सहयोग से हम लगातार बेहतर कार्य निष्पादन की ओर अग्रसर हो रहे हैं । कृपया इस क्रम को भविष्य में भी जारी रखें ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,
भवदीय,

(महेन्द्र सिंह महनोत)
महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष
बैंक नराकास, जयपुर

अध्यक्ष प्रकाशन उप-समिति का संदेश ...

नमस्कार साथियो,

एक बेहद प्रसिद्ध उक्ति है,**"अच्छी पुस्तकें, सच्चे मित्र, यही आदर्श जीवन है"**। जैसे शरीर को चलाने के लिए आवश्यक ऊर्जा के लिए हम खान-पान को समृद्ध और गुणवत्तापूर्ण बनाने पर ज़ोर देते हैं, वैसे ही हम सबके जीवन में वैचारिक ऊर्जा लाने के लिए सच्चे मित्रों और अच्छी पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का होना भी उतना ही जरूरी है। पत्र-पत्रिकाएँ अगर साहित्यिक हो तो फिर कहना ही क्या। यह हमारे लिए बहुत ही गौरव का विषय है कि बैंक नराकास, जयपुर द्वारा समिति की गृह पत्रिका "बैंक ज्योति" एवं अन्य प्रकाशनों के प्रकाशन के लिए हमारे कार्यालय को प्रकाशन उप समिति के संयोजन की ज़िम्मेदारी दी गयी है। हिन्दी भाषा की पैरोकार एवं साहित्यकारों की भूमि जयपुर की बैंक नराकास की पत्रिका "बैंक ज्योति" का सम्पादन तो और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

हम सभी बैंकिंग जगत से हैं और यह एक सर्वविदित तथ्य है कि बैंकिंग का स्वरूप दिन-प्रतिदिन बदलता जा रहा है। ऐसे में हम सबका यह दायित्व बनता है कि हम बैंकिंग जगत में हो रहे नवोन्मेषी कार्यों और तकनीकी नवाचारों से हमारे सभी साथियों को अवगत करवाएँ। इसके लिए हमें पत्रिका में बैंकिंग विषय आलेखों की संख्या बढ़ानी होगी। मेरा सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंक हेतु आपके कार्यालय से जुड़ी गतिविधियों, अन्य रचनात्मक आलेख, कविता के साथ-साथ बैंकिंग संबंधी स्तरीय आलेख भी प्रेषित करें।

पत्रिका के इस अंक में हमने सभी सदस्य कार्यालयों की गतिविधियों एवं स्टाफ सदस्यों की रचनाओं/आलेखों को सम्मिलित करने का प्रयास किया है। विविध विषयों पर आधारित आलेखों और कविताओं के माध्यम से इसे संपूर्णता प्रदान करने की दिशा में काम किया गया है। फिर भी, हमें आप से इस अंक पर प्रतिक्रिया और आगामी अंक हेतु सुझाव प्राप्त होने का इंतज़ार रहेगा। इस अंक को आप सभी को समर्पित करते हुए मैं प्रकाशन उप समिति के हमारे सहयोगी कार्यालय नाबार्ड, इंडियन बैंक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र और केनरा बैंक के कार्यपालकों एवं राजभाषा प्रभारियों को भी उनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग हेतु धन्यवाद देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी हमारे सभी सहयोगी कार्यालयों का सहयोग हमें इसी प्रकार मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

(संतोष कुमार बंसल)
उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख,
बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर क्षेत्र
अध्यक्ष, प्रकाशन उप-समिति
बैंक नराकास, जयपुर

सदस्य सचिव के शब्द ...

प्रिय सुधी पाठकों,

नमस्कार,
यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष व गौरव का विषय है कि मैं अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों में से एक समिति अर्थात बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर का एक सदस्य सेवक बन गया हूँ व मुझे समिति की पत्रिका "बैंक ज्योति" के माध्यम से आप सभी से अपने मनोभाव व्यक्त करने का सुखद अवसर प्राप्त हो रहा है।

यदि हम समिति के विगत छमाही के दौरान किए गए कार्यों, प्रतियोगिताओं एवं विभिन्न गतिविधियों पर नज़र डालें तो हम पाते हैं कि कोरोना जैसे विकटतम परिस्थितियों के बावजूद समिति के प्रत्येक गतिविधियों का यथा समय सफल आयोजन न केवल प्रेरणास्पद है, बल्कि अनुकरणीय भी है ।

जैसा कि हेनरी फोर्ड ने कहा है कि – **"एक साथ आना शुरुआत है, साथ रखना प्रगति है और साथ काम करना सफलता है"** निश्चय ही यह उक्ति हमारी समिति पर शत् प्रतिशत लागू होती है । समिति के सभी सदस्य कार्यालयों में कार्यरत हम सभी राजभाषा अधिकारीगण एक टीम के रूप में कार्य करते हैं, जिसके सुखद परिणाम भविष्य में स्पष्ट परिलक्षित होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है । बैंक ज्योति पत्रिका के इस अंक में हमने सदस्य कार्यालयों में आयोजित विभिन्न बैंकिंग एवं राजभाषाई गतिविधियों, समसामयिक आलेखों, कविताओं एवं अन्य उत्कृष्ट सामग्रियों से पत्रिका को ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक बनाने का प्रयास किया है, किन्तु पत्रिका को और भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिए आप सभी के सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी ।

सदस्य सचिव होने के नाते मैं हमारी समिति के विभिन्न उप समितियों एवं अन्य माध्यम से सहयोग प्रदान करने हेतु सभी सदस्य कार्यालयों के साथियों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ एवं समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सभी सदस्य कार्यालय के प्रमुखों से अनुरोध करता हूँ कि भविष्य में भी हमारा मार्गदर्शन करते रहें ताकि हमारी यह समिति, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन में सफल हो सके ।

सहयोग की अपेक्षा के साथ,

भवदीय,

(सोमेन्द्र यादव)
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य
सचिव, बैंक नराकास, जयपुर

आलेख

डोरस्टेप बैंकिंग

डोरस्टेप बैंकिंग, ये नाम सुनते ही ये समझ में आता है कि बैंकिंग का कोई नया नियम है जो अभी तक कम ही सुना और समझा गया है । वास्तव में ये नियम नहीं बल्कि एक सेवा है जो घर बैठे ही मिल जाती है ।

डोरस्टेप बैंकिंग का सीधा और आसान मतलब है कि आप घर बैठे ही बैंकिंग की सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। ग्राहक आसानी से बेसिक बैंक सेवाओं जैसे कि चेक ड्रॉप / कलेक्शन और नकद जमा और नकद निकालने जैसी सुविधाओं का लाभ अपने घर बैठे ले सकते हैं मतलब कि उन्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं होती। इस सर्विस का सबसे अधिक लाभ बैंक के ऐसे ग्राहकों को होगा, जो बैंक आने–जानें में असमर्थता महसूस करते है । डोरस्टेप बैंकिंग बूढ़े बुजुर्ग, दिव्यांग आदि उन सभी लोगों के लिए एक वरदान है जो लोग अपने घर से बैंक नहीं जा पा रहे हैं और ऐसे में यदि उन्हें बैंकिंग की सर्विस चाहिए तो डोरस्टेप बैंकिंग से उन्हें घर बैठे ही बैंकिंग सर्विस मिल जाती है। दरअसल ये बैंकिंग का एक ऐसा नवाचार है जिसकी शुरुआत पब्लिक सेक्टर बैंकों के एकरूपता वाले समूह (PSB alliance) द्वारा की गयी और इसका उद्देश्य यह है कि ज्यादातर ग्राहकों को उनके घर तक जाकर बैंकिंग लेनदेन की सुविधा दी जाए। बैंकों नें ग्राहकों को अपनी डोरस्टेप बैंकिंग सुविधा का लाभ प्राप्त करने हेतु बैंकों ने एक कॉमन सर्विस प्रोवाइडर को नियुक्त किया है, जो बैंकों से ग्राहकों को जोड़ते हुए उन तक सभी प्रकार की सर्विस पहुंचाएंगे ।

अब हम इस सुविधा के मूल तथ्यों को समझते हैं कि ये सुविधा व्यावहारिक क्यूँ है और इसके दूरगामी परिणाम क्या होने वाले हैं । वर्तमान में डोरस्टेप बैंकिंग सुविधा देश के 100 बड़े शहरों में प्रदान की जा रही है इसमें फाइनेंसियल और नॉन–फाइनेंसियल दोनों तरह की सुविधाएं ग्राहकों को मिल पा रही है। डोरस्टेप बैंकिंग के माध्यम से बेसिक बैंक सेवाओं के साथ–साथ और भी सुविधा मिलती हैं यहाँ तक की आप एक नई एफ.डी. भी खुलवा सकते हैं। पब्लिक सेक्टर बैंकों के ग्राहक भी अब ये सेवा ले सकते हैं जिसमें डोरस्टेप बैंकिंग के एजेंट्स के द्वारा युनिवर्सल टचपॉइंट जैसे कॉलसेंटर, वेब पोर्टल या फिर मोबाइल एप के जरिऐ ये सुविधा दी जा रही है ।

इस सुविधा का लाभ लेने के लिए आपको बैंकों के वेब पोर्टल, मोबाइल ऐप या फिर कॉल सेंटर पर फोन करके जानकारी देनी होगी । इसके आलावा आप https://www-psbdsb-in/ वेबसाइट पर जाकर भी रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं । इस सुविधा का लाभ प्राप्त करने के लिए ग्राहक का बैंक के साथ केवाईसी का अनुपालन पूर्ण होना चाहिए तथा वैध मोबाइल नंबर खाते के साथ पंजीकृत होना चाहिए ।

डोरस्टेप बैंकिंग की सेवा प्राप्त करने के लिए ग्राहक को उसके बैंक द्वारा प्रदान की गई मोबाइल बैंकिंग सुविधा के माध्यम से या फिर फोन से एक रिक्वेस्ट डालनी पड़ती है। उसके बाद बैंक द्वारा ग्राहक की उस रिक्वेस्ट को एक्सेस कर ग्राहक के बैंक रिकॉर्ड के अनुसार रजिस्टर्ड पते पर उसके कर्मचारी या फिर बैंक से जुडी सम्बंधित एजेंसी के व्यक्ति को भेजा जाता है । डोर स्टेप बैंकिंग सर्विस सिर्फ रजिस्टर्ड एड्रेस पर ही उपलब्ध कराई जाएगी । डोरस्टेप बैंकिंग सर्विस द्वारा किसी भी ग्राहक के साथ किसी भी तरह से फ्रॉड न हो, इसके लिए यह जरुरी किया गया है ।

किसी भी तरह की धोखेबाजी या फ्रॉड से बचने के लिए बैंक ग्राहक को व्यक्तिगत रूप से डोरस्टेप सर्विस एजेंट के सर्विस कोड को वेरिफाई करना होगा, जो कि ग्राहको के रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर एसएमएस द्वारा भेजा जायेगा । डोरस्टेप बैंकिंग रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया पूरी होनें पर आपके रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर एक कन्फर्मेशन एसएमएस भेजा जाएगा ।
डोरस्टेप बैंकिंग सुविधा फ्री में उपलब्ध नहीं है। इसमें प्रत्येक रिक्वेस्ट के लिए ग्राहक को कुछ बैंक चार्जेज देने होते हैं जो कि करीब 60 से लेकर 200 रूपए के बीच हो सकते हैं। इस सुविधा की सबसे खास बात यह है, कि आपको डोरस्टेप सर्विस एजेंट से अकाउंट नंबर, एटीएम कार्ड या इसके पिन से सम्बंधित कोई जानकारी साझा नहीं करना होगी और ना किसी प्रकार का शुल्क एजेंट को देना होगा, रिक्वेस्ट पूरा होने के बाद यह फीस आपके बैंक अकाउंट से अपने आप ही कट जाएगी। इसके साथ यह ध्यान रखा जाना जरुरी है कि अपनें बैंक खाता से पैसे निकालनें हेतु रिक्वेस्ट से पहले बैंक अकाउंट में पर्याप्त बैलेंस होना आवश्यक है, अन्यथा लेनदेन रद्द हो जाएगा ।

हालाँकि शुरुआत में इस सुविधा का लाभ केवल 70 साल और उससे ज्यादा के वरिष्ठ ग्राहकों के साथ दिव्यांग या चिकित्सकीय रूप से प्रमाणित पुरानी बीमारी वाले ग्राहकों अथवा पूर्ण रूप से निशक्त लोगों को ही मिल पाता था, परन्तु अब इस सुविधा का लाभ कोई भी बैंक ग्राहक ले सकता है।
निष्कर्ष :– बहुत से लोगों को बैंक तक जाने में दिक्कत आती है, जिसमें उन्हें दूसरों के ऊपर निर्भर होना होता है. Doorstep banking tech & savvy customers seniors और differently & unabled लोगों के लिए वास्तव में एक बहुत फायदेमंद चीज है क्योंकि उन्हें ऐसी सुविधा मिलने से अपने कार्यों को करने के लिए औरों के ऊपर निर्भर नहीं होना पड़ेगा।

विकास कुमार
प्रबंधक, राजभाषा पीएनबी
मंडल कार्यालय, जयपुर, दौसा

बैंक नराकास जयपुर एवं भारतीय रिज़र्व बैंक के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वेबिनार

अंतर राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में 'समग्र विकास में मातृभाषा की भूमिका' विषय पर व्याख्यान का आयोजन

आयोजन की कुछ झलकियाँ

श्री सुशील सिंघल, उप-महाप्रबंधक का स्वागत उद्बोधन ।

श्री महेंद्र सिंह महनोत, अध्यक्ष बैंक नराकास का संबोधन ।

मुख्य अतिथि डॉ. राजीव रावत की प्रस्तुति ।

भारतीय रिज़र्व बैंक,जयपुर के राजभाषा कक्ष द्वारा बैंक नराकास के तत्वावधान में दिनांक 26 फरवरी 2021 को अंतर राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में 'समग्र विकास में मातृभाषा की भूमिका'विषय पर सिस्को वेबेक्स के माध्यम से व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान हेतु डॉ. राजीव रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आई.आई.टी. खड़गपुर को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुशील सिंघल,उप महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, जयपुर द्वारा किया गया। उन्होंने इस व्याख्यान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. राजीव रावत श्री महेंद्र सिंह महनोत, अध्यक्ष नराकास श्री योगेश अग्रवाल , उपाध्यक्ष नराकास और इस कार्यक्रम में जुड़े सभी स्टाफ–सदस्यों का स्वागत किया।

उन्होंने इस समसामयिक विषय पर व्याख्यान के आयोजन के लिए राजभाषा कक्ष को बधाई दी। उन्होंने कहा कि जहाँ एक ओर यह बात अनेक शोधों के माध्यम से प्रमाणित हो चुकी है कि जिन बच्चों को आरंभिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में मिलती है उनका बौद्धिक विकास अधिक बेहतर होता है, वहीं दूसरी ओर यह भी सही है कि आज हम लोग अपनी मातृभाषा से कटने लगे हैं। अतः 'समग्र विकास में मातृभाषा की भूमिका' विषय का महत्व और आवश्यकता स्वतः सिद्ध हो जाता है।

डॉ. राजीव रावत ने अपने उद्बोधन में मातृभाषा की भूमिका और महत्व को रेखांकित करते हुए आज के दौर में मातृभाषाओं की स्थिति पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने गुरुकुल से लेकर गूगल तक और ऋग्वेद से लेकर वर्तमान परिदृश्य की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत कराते हुए व्यक्ति, समाज, देश और विश्व के समग्र विकास में मातृभाषाओं की भूमिका पर भी अपना चिंतन प्रस्तुत किया और इनको सँजोए रखने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। सभी श्रोताओं ने इस आयोजन की भूरि भूरि प्रशंसा की। सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

समसामयिक आलेख

बैंकों का निजीकरण

देश में 19 जुलाई 1969 को 14 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया था तथा 15 अप्रैल 1980 को 6 निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया । सरकार द्वारा बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने का मुख्य उद्देश्य था कि आम जनता को बैंकों से जोड़ कर जरूरतमंद नागरिकों को वित्त पोषित कर आर्थिक रूप से सक्षम बनाया जाए। भारत के प्रत्येक नागरिक तक बैंकिंग सुविधाओं का लाभ पहुँचाया जा सकें । इन उद्देश्यों के अनुरूप राष्ट्रीयकृत बैंकों ने सभी गरीब और अमीर नागरिकों को उनकी जरुरत के अनुरूप बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवाई जा रही है। जरूरतमंद किसानों, उद्यमियों, व्यापारियों, छात्रों को वित्त पोषित कर उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ा गया। राष्ट्रीयकृत बैंकों ने कृषि और सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम तथा बड़े उद्योगों को उत्पादक ऋण देकर जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने में अहम भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। आम आदमी को सुलभ और सस्ती दर पर आवासऋण उपलब्ध करवाए जा रहे हैं और आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभावान छात्रों को उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के लिए शिक्षा ऋण प्रदान कर उन्हें प्रगति के नए अवसर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं । देश के जरूरतमंद नागरिक को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना ही राष्ट्रीयकृत बैंकों का मुख्य ध्येय रहा है और इससे देश आर्थिक रूप से मजबूत बन रहा है ।

वर्तमान बैंकिंग परिवर्तनशील है और निरंतर रूप से प्रगति और विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है। बैंकिंग के सामने नित नई चुनौतियाँ आ रही हैं, जिसमें सबसे बड़ी चुनौती अनर्जक आस्तियां है। सभी बैंकों के एनपीए में वृद्धि हो रही है । इससे बैंकों की लाभप्रदत्ता और आस्तियों की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है । वर्तमान में एनपीए 13.5% है और बैंकिंग के धोखाधड़ी के कारण अंतरराष्ट्रीय पूंजी पर्याप्तता के मानदंड पूरे नहीं कर पा रहे हैं। बैंकों की वर्तमान स्थितियों को देखते हुए इस बात पर जोर है कि भारत के पास अंतरराष्ट्रीय मानदंड के स्तर को पूरा करने वाला कोई बैंक नहीं है ।

सरकार ने 70 के दशक एवं 80 के दशक में निजी बैंकों को राष्ट्रीयकृत किया गया और अब सरकार राष्ट्रीयकृत बैंकों का निजीकरण कर रही है । सबसे पहले दो सरकारी बैंकों और एक बीमा कंपनी समेत सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों और वित्तीय संस्थानों का निजीकरण की शुरूआत की गई ।

ज्यादातर निजी बैंक काफी हद तक मुनाफे में है । बहुत से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक पर्याप्त लाभ नहीं कमा रहे हैं और सरकार की उम्मीद है कि निजीकरण उन्हें लाभदायक व आत्मनिर्भर व्यवसायों में परिवर्तित कर सकता है। निजी क्षेत्र के बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की तुलना में उच्च प्रबंधन की स्वायत्तता और दृष्टिकोण, कर्मचारियों की मानसिकता, उचित निगरानी व्यवस्था व नवीनतम तकनीक के कारण अधिक कार्यकुशल है । वे अपनी परिचालन दक्षता के लिए भी जाने जाते है । बैंकों के निजीकरण के कुछ खतरे भी हैं, जिनसे निपटने के लिए सरकार को सतर्कता बरतनी होगी । सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की जिम्मेदारी होगी कि वे निजी बैंकों पर कड़ी निगरानी रखें ताकि जमाकर्ताओं के हित सुरक्षित रह सकें । इसके लिए जमाओं की बीमा राशि भी मौजूदा पाँच लाख रुपए से कई गुना बढ़ाने की जरूरत हैं । आरबीआई को निजी बैंकों के निदेशक मंडल सदस्यों के वित्तीय आचरण और बोर्ड में क्रियाकलापों पर भी निगरानी रखनी होगी । कुछ असफल हुए निजी बैंकों का अनुभव बताता है कि आरबीआई का पर्यवेक्षण पर्याप्त नहीं नहीं था । निजीकरण के दौर में आम नागरिक एवं ग्राहकों के हितों का हनन होने की ज्यादा संभावना रहेगी । ग्राहकों के लिए राष्ट्रीयकृत बैंक निजी बैंकों की तुलना में ज्यादा विश्वसनीय हैं ।

निजी क्षेत्र में लाभप्रदता को बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जाता है । निजी क्षेत्र में आम जन के कल्याण और हितों के स्थान पर केवल लाभ कमाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है । आज भी ग्राहक निजी बैंकों के स्थान पर सार्वजनिक बैंकों के साथ लेनदेन करने में विश्वास रखते हैं,क्योंकि उन्हें ज्ञात है कि सार्वजनिक बैंकों में सरकार की हिस्सेदारी होती है। इसलिए वे सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों के साथ बैंकिंग सुविधाओं का लाभ लेना चाहते हैं ।

निजीकरण के इस दौर में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक कर्मचारियों के लिए भी आत्मचिंतन का विषय है कि जन कल्याण के इतने गौरव पूर्ण इतिहास के बावजूद आम आदमी निजी बैंकों की ओर आकृष्ट क्यों हो रहे हैं? दूसरी ओर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के उच्च प्रबंधन को अपना ध्यान केंद्रित करना होगा कि निजी बैंकों की तुलना में बड़े उद्योगों को दिए गए उनके ऋण में एनपीए और डूबते ऋणों का प्रतिशत सात से आठ गुना अधिक क्यों है? यह भी ध्यान रहे कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को अपनी बैंकिंग सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए ग्राहक सेवा, तकनीकी बैंकिंग संसाधन को आम ग्राहकों के लिए और अधिक सुलभ बनाया जाना चाहिए ।

निष्कर्ष रूप से यही कहा जा सकता है कि बैंकों के निजीकरण के संबंध में सरकार को यह ध्यान में रखना चाहिए कि इस निजीकरण के दौर में किसान, सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम, लघु उद्यमी, छात्र एवं अन्य आम आदमी सुगम व सस्ती बैंकिंग सेवाओं से वंचित न हो जाए ।

ललित कुमार जांगिड़
प्रबंधक (राजभाषा)
केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, जयपुर

आलेख

नई शिक्षा नीति में मातृभाषा का महत्त्व

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"

'निज भाषा' अथवा 'मातृभाषा' के विषय में 'भारतेंदु हरिश्चंद्र की ये पंक्तियां उस समय जितनी सार्थक थीं, आज भी उतनी ही समीचीन हैं।

'मातृभाषा'वह भाषा है जिसे बच्चा जन्म के बाद अपने परिवार में सीखता है। यह वह प्रथम भाषा होती है जिसे वह अनायास ही सीख जाता है। गांधी जी का मत था कि मातृभाषा का स्थान कोई दूसरी भाषा नहीं ले सकती। उनके अनुसार,"गाय का दूध भी मां का दूध नहीं हो सकता।" इससे किसी व्यक्ति के जीवन में मातृभाषा का महत्त्व स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

भारत एक बहुभाषिक देश है जो किसी भी अन्य देश की तुलना में भाषिक स्तर पर अधिक समृद्ध है। मातृभाषा हमारे 'स्व' की भाषा है, जो माँ के आंचल से पल्लवित होकर हमारे मानसिक विकास को पहला शब्द और

संप्रेषण देती है,वह भाषा जिसमें हम सोचते– समझते हैं, वह भाषा जो हमारे संस्कारों की संवाहक है, जो हमारी समृद्ध संस्कृति को जीवित रखती है और जिसके माध्यम से हम अपनी भावी पीढ़ी को गौरवमयी विरासत सौंप सकते हैं। हमारे जीवन में मातृभाषा, लोक साहित्य, संगीत, नृत्य आदि का विशेष महत्त्व है। हम विश्व की कोई भी भाषा सीख सकते हैं लेकिन मातृभाषा हमें अपनी मां से आशीर्वाद के रूप में मिलती है। हम किसी भी भाषा में बौद्धिक संतुष्टि प्राप्त कर सकते हैं लेकिन आत्मिक तृप्ति हमें अपनी मातृभाषा में ही मिलती है। कोई भी स्वाभिमानी समाज अपनी परम्पराओं और सांस्कृतिक विरासत को संजोकर रखने का सतत प्रयास करता है और हम अपने त्योहार, रीति रिवाज और लोक संस्कृति को अपनी मातृभाषा में ही संजोकर रख सकते हैं, किसी अन्य भाषा में नहीं।

शायद इसीलिए भारत सरकार द्वारा जुलाई 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा को बहुत महत्त्व दिया गया है। नई शिक्षा नीति में भाषा के सामर्थ्य को स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है और शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रयोग पर जोर दिया गया है। यह नीति सुप्रसिद्ध अंतरिक्ष वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। नई शिक्षा नीति लगभग 36 वर्षों के अंतराल के बाद घोषित की गई है। स्वतंत्रता के बाद देश में पहली नीति 1968 में घोषित की गई थी जो कोठारी आयोग (1964–1966) की सिफारिशों पर आधारित थी। इस नीति में 14 वर्ष के आयु तक के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा पर जोर दिया गया और माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषा सूत्र लागू करने का आह्वान किया गया। इसके उपरांत राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 लागू की गई जिसमें प्राथमिक विद्यालयों को बेहतर बनाने पर फोकस रखा गया। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 1992 में संशोधन किया गया जिसमें मेडिकल और इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षाओं की अत्यधिक संख्या को कम करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त प्रवेश परीक्षा तथा राज्य स्तर पर राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षाएं आयोजित करने की सिफारिश की गई जिससे छात्रों के मानसिक बोझ को कम किया जा सके।

नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने की दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प का भाव दिखता है। नई शिक्षा नीति में स्कूल के पाठ्यक्रम को 10+2 के ढांचे के स्थान पर 5+3+3+4 की नई संरचना लागू किए जाने की बात की गई है। नई शिक्षा नीति में कक्षा 5 तक मातृभाषा, स्थानीय भाषा और क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया है। इसके आगे आठवीं कक्षा तक और उसके ऊपर भी भारतीय भाषाओं में अध्ययन की जरूरत पर जोर दिया गया है। केंद्र सरकार द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. को यह जिम्मेदारी सौंपी गई है कि वह भारत के संविधान की अष्टम अनुसूची में वर्णित भाषाओं में पाठ्य पुस्तकें तैयार करें और उसे शीघ्र संबंधित कक्षाओं के लिए उपलब्ध कराएं। उच्च शिक्षा में भी भारतीय भाषाओं में से विकल्प के चयन की छूट देने की बात की गई है।

इसके अतिरिक्त, विद्यालय में सभी स्तरों पर तथा उच्च शिक्षा में संस्कृत को एक विकल्प के रूप में चुनने का अवसर दिए जाने की सिफारिश की गई है। हालांकि, किसी भी विद्यार्थी पर कोई भाषा थोपी नहीं जाएगी बल्कि विद्यार्थी स्वेच्छा से और अपनी अभिरुचि के अनुसार भाषा का चयन कर सकता है। विद्यार्थियों को एक भारत, श्रेष्ठ भारत पहल के तहत कक्षा 06 से 08 के दौरान किसी भी समय भारत की भाषाओं पर एक आनंददायक परियोजना/गतिविधि में भाग लेना होगा। इस प्रकार, केंद्र सरकार ने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और विकास के लिए प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय भाषाओं को शामिल करने की सिफारिश की है। सरकार की योजना के अनुसार स्कूलों में त्रिभाषा सूत्र को मजबूत किया जाएगा। इसमें संस्कृत के साथ–साथ तीन अन्य भारतीय भाषाओं का विकल्प होगा।

यदि हम मनोवैज्ञानिक स्तर पर देखें तो पाएंगे कि बच्चों में मानसिक विकास बहुत तेजी से होता है और इस अवस्था में वह अपनी मातृभाषा में सबसे अधिक सहज होता है। इसी अवस्था में स्मरण करने, सोचने–समझने और निर्णय लेने की क्षमताओं का विकास बहुत तेजी से होता है। साथ ही, यह भी सत्य है कि मौलिक चिंतन किसी दूसरी भाषा में नहीं, बल्कि अपनी ही भाषा में संभव है। यदि बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ाई करेंगे तो शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक होगा, उनमें पढ़ने के प्रति उत्साह जगेगा। भारतीय भाषाओं में शिक्षा देकर एक ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण होगा जो

हमारे राष्ट्र के मूल्यों और परंपराओं के वाहक का काम करेगी। नई शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर पर शिक्षण के माध्यम के लिए मातृभाषा/स्थानीय भाषा के प्रयोग पर जोर देने का मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चों को उनकी मातृभाषा और संस्कृति से जोड़ते हुए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया जाए।

यह उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1968 में भी इस बात पर जोर दिया गया था कि शिक्षा के स्तर में सुधार और ज्ञान के विस्तार के लिए भारतीय भाषाओं को सशक्त करना आवश्यक है। यूनेस्को ने भी 2003 की अपनी एक रिपोर्ट में यह उल्लेख किया है कि मातृभाषा में शिक्षा देने से शैक्षणिक गुणवत्ता में बढ़ोतरी होती है और ज्ञानार्जन में सहायता मिलती है।

नई शिक्षा नीति में उपर्युक्त बातों की मूल भावना को समाहित किया गया है और स्कूलों तथा कॉलेजों में भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने का संकल्प लिया गया है। इससे प्राथमिक विद्यालयों में मातृभाषा या स्थानीय भाषा में पठन–पाठन संभव हो पाएगा। इतिहास साक्षी है कि जिन देशों ने अपनी भाषा में अपने बच्चों को शिक्षा दी वे आज विकसित देशों की श्रेणी में हैं। अमेरिका, जर्मनी, जापान, फ्रांस, चीन, इजराइल आदि देशों में शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान और शोध के साथ–साथ कारोबार की भाषा भी उनकी अपनी भाषा है। भारत को फिर से विश्व–गुरू बनाने के लिए सबसे पहले हमारे देश के विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं में लिखने और बोलने में प्रवीण होने की आवश्यकता है। हमारे देश के बच्चों को यह समझना होगा कि भारतीय भाषाएं हमारी अस्मिता की पहचान हैं। यदि हम अपने बच्चों को उनकी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षित करेंगे तो आगे चलकर प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी आदि क्षेत्रों में उन्हें अपने देश की भाषा में काम करने में न कोई परेशानी होगी और न ही झिझक। प्राचीन काल में भारत में शिक्षा व्यवस्था इतनी सुदृढ़ थी कि हमारा देश अपनी भाषाओं के बल पर ही विश्व गुरू था। तक्षशिला, विक्रमशिला, नालंदा आदि विश्वविद्यालयों में विज्ञान, दर्शन, धर्म, कला आदि की शिक्षा संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में ही दी जाती थी। हमारे प्राचीन ग्रंथ भी संस्कृत और भारतीय भाषाओं में ही हैं और इन ग्रंथों ने पूरे विश्व को हमेशा से दिशा प्रदान की है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि नई शिक्षा नीति की घोषणा वर्तमान की चुनौतियों को ध्यान में रखकर भारत को एक सशक्त, ज्ञानवान राष्ट्र बनाने तथा विश्वगुरू और वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने की ओर एक क्रांतिकारी कदम है। इसके परिणामस्वरुप बच्चे धीरे–धीरे स्वयं उससे जुड़ने लगेंगे तथा आने वाले समय में माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा दोनों में इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। इससे स्थानीय मातृभाषाएं भी समृद्ध होगी तथा परिवर्तन के साथ भाषा भी निरंतर सुदृढ़ होती रहेगी। मातृभाषा में पठन–पाठन से बच्चों में भाषा की जड़े मजबूत होगी तथा उसे अपनी भाषा के प्रति गर्व की अनुभूति होगी।

यहाँ पर केदारनाथ सिंह की 'मातृभाषा' की पंक्तियाँ उद्धृत प्रासंगिक होगा –

"जैसे चींटियाँ लौटती हैं
बिलों में
कठफोड़वा लौटता है
काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई–अड्डे की ओर
ओ मेरी भाषा
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते–रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा।"

डॉ. निधि शर्मा
प्रबंधक
भारतीय रिज़र्व बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

क्षेत्रीय कार्यालय, बैंक ऑफ़ बड़ौदा

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन

बैंक ऑफ बड़ौदा,जयपुर अंचल एवं क्षेत्र द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर "आत्मनिर्भर भारत में बैंकों का योगदान" विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को श्री एस एस सोमरा, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र, राजस्थान विश्वविद्यालय ने संबोधित किया।

अंतर राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर मॉडल शाखा महेश नगर द्वारा आयोजन

अन्तराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बैंक ऑफ बड़ौदा,जयपुर क्षेत्र, जयपुर अंचल की आदर्श शाखा महेश नगर में राजस्थान की समृद्ध साहित्य संपदा को समर्पित "राजस्थानी काव्य पाठ प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। इस हेतु राजस्थान के मूर्द्धन्य साहित्यकार श्री कन्हैयालाल सेठिया की अमर कृति "पाथळ और पीथळ" का चयन किया गया। शाखा प्रबंधक श्री ललित सूंटवाल और प्रबंधक (राजभाषा) जयपाल सिंह ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया।

अंतर राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

बैंक ऑफ बड़ौदा,जयपुर क्षेत्र द्वारा मातृभाषा दिवस के अवसर पर क्षेत्र के सभी स्टाफ सदस्यों हेतु दिनांक 08.02.2021 से 19.02.2021 तक "मायड़ बोली रो पैरोकार प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। श्री संतोष कुमार बंसल, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा क्षेका, जयपुर में आयोजित समारोह के दौरान विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 18.06.2021 को बैंक ऑफ बड़ौदा,जयपुर क्षेत्र की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री संतोष कुमार बंसल की अध्यक्षता में किया गया।

बैठक के दौरान उप महाप्रबंधक एवं प्रमुख, राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह द्वारा "ग्राहकों (आंतरिक एवं बाह्य) के साथ संवाद/संबंध सुदृढ़ करने में हिन्दी का सशक्त टूल के रूप में उपयोग" विषय पर विशिष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

अंचल कार्यालय, बैंक ऑफ़ बड़ौदा

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की 121 गोल्ड लोन शॉपी का उद्घाटन

दिनांक 15.03.2021 को श्री विक्रमादित्य सिंह खीची, कार्यपालक निदेशक, बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा राज्य में बैंक ऑफ बड़ौदा के सभी 12 क्षेत्रीय कार्यालयों में 121 गोल्ड लोन शॉपी का वर्चुअल उद्घाटन किया गया। वर्चुअल उदघाटन समारोह में श्री महेंद्र सिंह महनोत, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, श्री योगेश अग्रवाल, उपमहाप्रबंधक एवं उपअंचल प्रमुख, श्री प्रदीप बाफना, नेटवर्क उपमहाप्रबंधक, श्री आर. सी. यादव, नेटवर्क उपमहाप्रबंधक, श्री सी.पी. अग्रवाल, सहायक महाप्रबंधक, एसएलबीसी राजस्थान, जयपुर अंचल के क्षेत्रीय प्रमुख व वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सहभागिता की गई।

राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी, राजस्थान की 148 वीं बैठक

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, राजस्थान की 148वीं बैठक दिनांक 26.03.2021 को जयपुर में बैंक ऑफ बड़ौदा के कार्यपालक निदेशक श्री विक्रमादित्य सिंह खीची की अध्यक्षता में संपन्न हुई। श्री महेंद्र एस. महनोत, महाप्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा एवं संयोजक, राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति, राजस्थान के समन्वय में आयोजित बैठक में श्री नवीन जैन, आयोजना सचिव राज. सरकार, श्रीमती रश्मि गुप्ता, आयुक्त (महिला एवं बाल विकास विभाग, राजस्थान सरकार), श्री दीपक नंदी, विशिष्ट सचिव, स्वायत्त शासन विभाग, राजस्थान सरकार, श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक (भारतीय रिजर्व बैंक), केंद्र व राज्य के विभिन्न विभागों के उच्च अधिकारियों, बीमा कम्पनी तथा अन्य सभी बैंकों के प्रतिनिधि वर्चुअल माध्यम से जुड़े रहे।

गणतंत्र दिवस समारोह 2021

गणतन्त्र दिवस समारोह 2021 के अवसर पर अंचल कार्यालय, जयपुर में ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस अवसर पर महा प्रबन्धक एवं अंचल प्रमुख श्री महेंद्र सिंह महनोत एवं उप अंचल प्रमुख श्री योगेश अग्रवाल सहित अन्य कार्यपालकों तथा स्टाफ सदस्यों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया ।

एस.एल.बी.सी. राजस्थान द्वारा कोरोना वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजन

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन में कार्यरत राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी, राजस्थान (एसएलबीसी) द्वारा बैंकिंग स्टाफ के कोविड–19 वैक्सीनेशन के लिए बैंक ऑफ बड़ौदा की हौम्योपैथी शाखा एवं बड़ौदा स्वरोजगार विकास संस्थान, जयपुर में एक दिवसीय टीकाकरण शिविर आयोजित किए गए। इस अवसर पर एसएलबीसी समन्वयक एवं महाप्रबंधक श्री महेंद्र सिंह महनोत, नेटवर्क उप महाप्रबंधक एवं एसएलबीसी प्रभारी श्री प्रदीप कुमार बाफना, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख, जयपुर क्षेत्र श्री एस के बंसल उपस्थित रहे।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

केनरा बैंक

दिनांक 26.02.2021 को अंचल कार्यालय, जयपुर में अंचल प्रमुख श्री पुरशोत्तम चन्द की अध्यक्षता में 'धन संवृद्धि: हमारे बैंक का शेयर मूल्य बढ़ाना' विषय पर हिन्दी में परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित।

दिनांक 31.05.2021 को अध्ययन व विकास केंद्र जयपुर से कर्मचारी एवं अधिकारी संवर्ग के लिए जोहो ऐप के माध्यम से हिंदी कार्यशाला का आयोजन।

अंचल कार्यालय, जयपुर द्वारा अंचल प्रमुख श्री पुरशोत्तम चंद के कुशल मार्गदर्शन में दिनांक 05.02.2021 को महिला उद्यमी विकास कार्यक्रम का आयोजन।

अंचल प्रमुख श्री पुरशोत्तम चन्द के कुशल मार्गदर्शन में दिनांक 22.02.2021 को अंचल कार्यालय, जयपुर में मेगा केन अदालत का आयोजन।

दिनांक 12.02.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर II में महाप्रबंधक श्री पुरशोत्तम चंद की अध्यक्षता में क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर II की शाखाओं के कारोबार निष्पादन की समीक्षा बैठक आयोजित।

केनरा बैंक द्वारा दिनांक 16.06.2021 को दबावग्रस्त आस्तियों की पहचान और प्रबंधन विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

इंडियन बैंक

अंचल कार्यालय, जयपुर - महिला दिवस का आयोजन

इण्डियन ओवरसीज बैंक

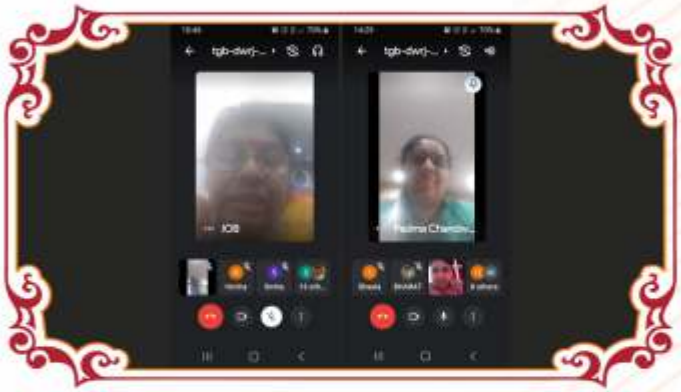

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

अंचल प्रबंधक एवं उप अंचल प्रबंधक द्वारा अंचल की गृह पत्रिका ''इंड - मरुधरा'' का विमोचन

भारतीय स्टेट बैंक

गतिविधि : भारतीय स्टेट बैंक प्रशासनिक कार्यालय जयपुर में स्टाफ के बच्चों के लिए आयोजित हिन्दी कविता पाठ, गीत गायन व चित्रकारी प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह माननीय उपमहाप्रबंधक महोदय के कर कमलों से हुआ ।

अंचल कार्यालय इंडियन बैंक द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

यूको बैंक

अंचल कार्यालय,जयपुर की वार्षिक संगोष्ठी
जी.डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला, 2020-21 का आयोजन

मंच पर (बाएं से) : मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. सुधीर साहु, उप अंचल प्रमुख श्री बी एस गुरूंग, अंचल प्रमुख श्री प्रदीप कुमार जैन, अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर के उप प्राचार्य डॉ प्रद्युम्न सिंह राठौर, यूको बैंक आगरा रोड शाखा के प्रमुख श्री अनीश शर्मा

जी.डी. बिड़ला स्मृति सम्मान समोराह 20-21 अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग की अध्यक्षा डॉ. संगीता जैन को जी डी बिड़ला सम्मान प्रदान करते हुए अंचल प्रमुख श्री प्रदीप कुमार जैन एवं उप अंचल प्रमुख श्री बी एस गुरूंग

अग्रवाल महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी

वर्तमान बैंकिंग में लेखा परीक्षा एवं निरीक्षण का महत्व विषय पर आयोजित हिंदी संगोष्ठी

यूको बैंक, अंचल कार्यालय के सभागार में दिनांक 24 फरवरी 2021 को वर्तमान बैंकिंग में लेखापरीक्षा एवं निरीक्षण का महत्व विषय पर आयोजित हिंदी संगोष्ठी को कार्पोरेट महाप्रबंधक श्रीमती आशा राजीव तथा महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री प्रदीप कुमार जैन ने संबोधित किया। इस संगोष्ठी में अंचल कार्यालय एवं आर्केड इंटरनेशनल भवन में स्थित सिविल लाईन्स शाखा तथा क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र के अधिकारियों सहित जयपुर की कई शाखाओं के शाखा प्रमुखों ने सहभागिता की।

किसी भी काम को बाद के लिए न छोड़ें

कार्यनीति आयोजना और वित्त विभाग बैंक के कारोबार को सुचारू रूप से गतिमान रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण विभाग हैं। कई बार हम अपनी ओर से कुछ कामों को कम महत्वपूर्ण मानकर बाद के लिए रख लेते हैं। हम सोचते हैं कि इस काम को हम फुरसत मिलने पर कर लेंगे। लेकिन वह फुरसत हमें कभी मिलती नहीं। आज किसी के पास भी कामों की कोई कमी नहीं है, न आगे कामों की कमी होने वाली है। यह कई कामों को एक साथ करने (मल्टीटास्किंग) का युग है। सभी काम महत्वपूर्ण हैं और एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। किसी भी काम को छोड़ नहीं सकते। अगर हम वसूली ही करते रहें और नये ऋण देना छोड़ दें तो ब्याज की आमदनी कम होती जाएगी। नये ऋण ही देते रहें और वसूली न करें तो दिया हुआ पैसा वापस नहीं आएगा। इसी तरह अगर हम गैर ब्याज आय पर ध्यान नहीं देंगे तो बैंक के लाभ में वृद्धि नहीं हो पाएगी। हमारे पास अपार संभावनाऐं मौजूद हैं। लेकिन हम अपनी समझ से केवल जरूरी काम निपटाकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर रहे हैं। अपने बकाया कार्यकलापों का अवलोकन व चिंतन न करके हम ग्राहक को सुविधा पाने से वंचित तो कर ही रहे हैं, बैंक की आय को बढ़ने से भी रोक रहे हैं।

किसी भी संस्थान को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए निरंतर प्रगति की अत्यंत आवश्यकता है। शाखा का प्रत्येक कार्मिक अपने प्रयास से पूरे संस्थान को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकता है। किसी एक के द्वारा काम में ढिलाई रखने पर पूरे संस्थान को उसका खामियाजा भुगतना पड़ता है। किसी भी काम के लंबित होने के पीछे समय न मिलने का बहाना करना या बैंक की योजनाओं या कार्यपद्धति में कमी निकालना सर्वथा अनुचित बात है। क्योंकि किसी भी व्यक्ति के लिए कोई भी काम मुश्किल या असंभव नहीं होता। अगर व्यक्ति ठान ले तो हर काम कर सकता है। इच्छाशक्ति के आगे समस्त परेशानियां घुटने टेक देती हैं।

कुछ ऐसे ही महत्वपूर्ण कामों पर मैं आज आपका ध्यान दिलाना चाहती हूँ, जिन्हें अक्सर हम बाद के लिए छोड़ दिया करते हैं –

अतिदेय लॉकर किराये की वसूली :– अक्सर देखा गया है कि ग्राहक के खाते में पर्याप्त शेष राशि होते हुए भी लॉकर का किराया नियत तिथि पर डेबिट नहीं किया जाता। किराया समायोजित नहीं करने अथवा देरी से करने पर बैंक को आय व ब्याज दोनों का नुकसान होता है। बिजली के बिल, भवन के किराए, इंटरनेट व वेतन की निरंतर वृद्धि से निपटते से हुए लाभ अर्जित करने के लिए हमें एक एक पैसे की आय को बटोरना होगा। प्रसिद्ध वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन के विकासवाद सिद्धांत के अनुसार जो सक्षम होते हैं वही टिक पाते हैं, बाकी समाप्त हो जाते हैं। यदि हमें अपने व्यवसाय में बने रहना है तो प्रत्येक स्तर पर यह ललक होनी चाहिए कि हमारे संस्थान की आय बढ़े। अतः एक निर्धारित समय पर प्रतिदिन यह जांच लें कि आज की तारीख में किसी का लॉकर किराया प्राप्त होने से तो नहीं रह गया है।

खाली पड़े लॉकरों का आबंटन :–खाली पड़े लॉकर्स के आबंटन हेतु निरंतर विपणन (मार्केटिंग) प्रक्रिया के तहत प्रयास किए जाएं। किसी को एक लॉकर आबंटित करने से बैंक के लिए एक नई आमदनी शुरू हो जाती है। इससे हमारा एक ग्राहक स्थाई रूप से हमसे जुड़ जाता है। वह अन्य योजनाओं में भी रुचि लेने लगता है। मात्र लॉकर के माध्यम से हम बहुमुखी आय उत्पन्न कर सकते हैं।

बैंक की विभिन्न योजनाओं का प्रचार–प्रसार :– अक्सर देखा गया है कि छोटे–छोटे अक्षरों वाले सर्कुलर लगाकर यह अपेक्षा की जाती है कि ग्राहक इसको पढ़कर हमारी योजनाओं में रुचि लेगा। इससे 2: मामलों में ही सफलता मिल पाती है। कुछ अधिक पाने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। हमें मैग्नेटिक बोर्ड द्वारा बड़े–बड़े अक्षरों में 'आज का आकर्षण बिंदु' के तहत प्रतिदिन किसी न किसी योजना का प्रचार करना चाहिए ताकि ग्राहक की नजर तक हमारा संदेश पहुंच जाए। जिन शाखाओं में हमारे उत्पादों की आशा से अधिक बिक्री होती है उनके विचार तथा कार्यप्रणाली से अन्य शाखाओं को भी लाभान्वित कराया जाए। कैनोपी लगाकर भी जनसंपर्क अभियान का लाभ उठाया जा सकता है। त्योहारों तथा बैंक स्थापना दिवस पर विशेष आयोजन कर अपने लक्ष्यों की पूर्ति की जा सकती है।

पीओएस मशीन की बिक्री में वृद्धि :–नये व्यापारी खातेदारों को पीओएस मशीन के बारे में बताकर आसानी से मशीन की बिक्री की जा सकती है। इस मशीन के जरिये न केवल आय प्राप्त होती है, अपितु बिना बैंक में भीड़ लगाए जमा राशि में लगातार वृद्धि होती रहती है। साथ ही, बैंक को बिना ब्याज की जमा राशि प्राप्त होती रहती है। हमारा यह निरंतर प्रयास होना चाहिए कि प्रतिदिन कम से कम एक मशीन अवश्य बेची जाए।

बैंक के कासा में वृद्धि करना :–बिना ब्याज की जमा राशि तथा बचत खाते से प्राप्त धनराशि ही हमारी आय में चमत्कारिक परिवर्तन लाती है। शाखा में चालू एवं बचत खातों की संख्या में निरंतर वृद्धि करके हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। अक्सर देखा गया है कि अवयस्कों के बचत खातों में निकासी नहीं होती, केवल राशि जमा होती और बढ़ती रहती है। अतः स्कूलों से व्यक्तिगत संपर्क करके विद्यार्थियों के नये खाते खुलवाने के अभियान वर्ष में दो या तीन बार चलाने चाहिए। इससे छात्रों में बचत करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी और हमारे उद्देश्यों की पूर्ति भी होगी।

डोरस्टेप बैंकिंग :–बैंक के ग्राहकों के लिए लागू की गई डोरस्टेप बैंकिंग प्रणाली "बैंक आपके द्वार पर" का प्रचार करके तथा आए हुए कॉल पर तुरंत सेवा पहुँचाने से बैंक की ख्याति व सेवा प्रणाली का दूर–दूर तक प्रचार होता है। हमें नई जमाराशि और ऋण आवेदन तो मिलते ही हैं, साथ ही इस प्रणाली से बैंक के ग्राहक आधार में तेजी से वृद्धि होती है। हमें व्यवसाय के दूरगामी लाभ प्राप्त होते हैं।

प्रबंधन स्तर पर बहुत अच्छी–अच्छी योजनाएँ शुरू की गई हैं परंतु जब तक इनको पूरी तरह से और पूरे मन से लागू नहीं किया जाता, हम इसके लक्ष्यों को कभी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। वाहन के किस पुर्जे का संचालन किस गति से करना है यह उसके चालक पर निर्भर करता है। कार्य निर्बाध रूप से चलता रहे, इसके लिए प्रबंधन स्तर पर लगातार दृष्टि बनाए रखने व फॉलोअप करते रहने से अच्छे परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

श्रीमती रितु शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, कार्यनीति आयोजना एवं वित्त विभाग, यूको बैंक अंचल कार्यालय, जयपुर

समसामयिक आलेख

जलवायु संकट के समाधान के लिए वैश्विक पहल और प्रतिबद्धता

हम पूरी तरह से एक ग्लोबल जलवायु संकट की छाया में जी रहे हैं। जहाँ दुनियाभर में जो कुछ घट रहा है और स्वयं पर जो बीत रहा है, हम उसके महज लाचार दर्शक हैं। अपना शहर, अपना देश बदलने भर से इस संकट से मुक्त नहीं हो सकते हैं। धीरे–धीरे इस संकट की छाया पूरी दुनिया पर फैलती जा रही है।दुनियाभर के पर्यावरणविदों ने जलवायु परिवर्तन पर अनुसंधान किया। उनके ये प्रयास इस धरती के संरक्षण के लिएएक नई 'उम्मीद–ए–सहर' को जमीन पर उतारने जैसे रहे। इस संदर्भ में वैश्विक पर्यावरण संरक्षण संगठनों की बड़ी भूमिका रही है।... कहा जा सकता है कि विकसित देशों के जलवायु संरक्षण के प्रति ढुलमुल या कम प्रतिबद्धता के रवैये की कीमत विकासशील देशों को प्राकृतिक आपदाएँ झेलकर चुकानी पड़ रही है, जिनसे भारी जान–माल की क्षति होती है। यानि करे कोई और भरे कोई। कुल मिलाकर हमारा देश इस ग्लोबल संकट में समस्या का हिस्सा नहीं है बल्कि इस संकट के समाधान में अपना योगदान देता आया है। महात्मा गांधी कहते हैं कि "धरती मनुष्य की आवश्यकताओं की तो पूर्ति तो आसानी से कर सकती है मगर उसके लालच की नहीं।" वस्तुतः यह कथन आज इतना प्रासंगिक है कि प्रत्येक व्यक्ति, समाज व देश को इसे अनिवार्य जीवन–दर्शन के रूप में अपनाना चाहिए।

क्या हम लौट सकते हैं?
नदी के पास
वनस्पतियों के पास
पशु–पक्षियों के पास
मनुष्यों के पास
निकलकर वहाँ से दूर चले आयें हैं
उन रास्तों की याद आती है
यह न रेगिस्तान है, न पठार है, न बर्फ़ की वीरानी
यह बंजर होती दुनिया
अंदर से सख्त होती जा रही है
वह जीवन इतना बुरा तो न था?*

समकालीन कवि अरुण देव अपनी इस कविता में मनुष्य की यात्रा का सिंहावलोकन करते हुए सीधे तौर पर दो सवाल पूछते हैं– एक, "क्या हम लौट सकते हैं?"दूसरे, "वह जीवन इतना बुरा तो न था?"यात्रा के इस पड़ाव पर लौटने के विकल्प की चाहना करना; ऐसा प्रतीत होता है कि आज तक की यह यात्रा अर्थवान नहीं रही है। अनुमान लगाया जा सकता है कि मनुष्य

ने इस यात्रा के दौरान जल्दबाजी की या दिग्भ्रमित हुआ,परंतु यह सत्य है कि 'अपरिपक्व' निर्णयों के साथ वह गलत रास्तों पर चल पड़ा; जबकि उसके पुराने रास्ते ज्यादा सही थे, जो पीछे छूट गए। फलतः आज मनुष्य एक ऐसी बंजर होती दुनिया में पहुँच गया है, जो अंदर से सख्त है। यह धरती सबकी जननी रही है। इसे माँ यदि कहते हैं तो इसलिए, क्योंकि इसने ही जीव, वनस्पति, खनिज आदि सब पैदा किए। अब तक के ज्ञात सबसे पुराने जंगल के अवशेष (फोसिल) की आयु भी लगभग चालीस करोड़ वर्ष हैं, जबकि मनुष्य को पैदा हुए अभी केवल दो लाख वर्ष ही हुए हैं। अपने अग्रजों की तुलना में मनुष्य की आयु बहुत छोटी दिखती है, परंतु इस अल्प आयु में वह अपनी धरती माँ को भयंकर क्षति पहुंचा चुका है। जब मनुष्य द्वारा संवहनीयता को स्वार्थ वश बलि कर दिया गया और सह–अस्तित्व के सिद्धान्त को तिलांजलि दे दी गई तब इस मुकाम पर दुनिया का बंजर बन जाना, विद्रूप हो जाना अकारण नहीं है। यह विद्रूपता एक प्रकार से जंगल, पहाड़, रेगिस्तान, समुद्र, पर बिखरी पड़ी है,उससे कहीं अधिक मनुष्य के मन में भी कई–कई परतों में गहरे बैठ गई है।

कुल मिलाकर, यह कविता मानव सभ्यता की आज तक की निष्पत्ति (वर्तमान दुर्दिनों) को हमारे सामने रखती है। वस्तुतः अच्छी कविता का काम ही है– सचेत करना, रास्ता दिखाना, अंतस के आयतन में कुछ जोड़–तोड़ कर परिष्कृत करना। प्रस्तुत काव्य–दृष्टांत यह सोचने पर विवश कर रहा है कि मानव सभ्यता का मौजूदा मुकाम एक 'अनचाही सहर'है, जहाँ न केवल मनुष्य बल्कि मनुष्येतर प्राणी लगभग विकल्पहीन स्थिति में पहुँचते जा रहे हैं। इस सहर के बाद भयावह तपिस का सूरज आसन्न ही है, जिससे जीवनास्तित्व के समाप्त हो जाने की भयावह आशंका मंडरा रही है। कहना न होगा कि हम पूरी तरह से एक ग्लोबल जलवायु संकट की छाया में जी रहे हैं। जहाँ दुनियाभर में जो कुछ घट रहा है और स्वयं पर जो बीत रहा है, हम उसके महज लाचार दर्शक हैं। अपना शहर, अपना देश बदलने भर से इस संकट से मुक्त नहीं हो सकते हैं। धीरे–धीरे इस संकट की छाया पूरी दुनिया पर फैलती जा रही है।

स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन का संकट किसी एक देश का नहीं है, बल्कि यह वैश्विक है। इसके कारण धरती का तापमान (ग्लोबल वॉर्मिंग) लगातार बढ़ रहा है, दुनियाभर में मौसम के पैटर्न में बदलाव आ रहा है जिससे कभी सूखा, कभी बाढ़ की आपदाएँ आ जाती हैं। हवा–पानी की गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित हो रही है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अब सर्वत्र दिखाई देने लगा है। आस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी भीषण आग, अफ्रीका के उपसहारा क्षेत्र का सूखा और टैक्सास में हड्डी जमाने वाली ठंड पड़ना आदि जलवायु परिवर्तन के ही उदाहरण हैं। वर्तमान समय में, कोविड–19 महामारी ने दुनियाभर में लाखों लोगों को लील लिया। लेकिन सुखद है कि इस महामारी की वैक्सीन बना ली गई है, आशा है निकट भविष्य में यह पूरी तरह से नियंत्रण में आ जाएगी। किन्तु भिन्न–भिन्न किस्म के प्रदूषणों से होने वाले कैंसर से दुनिया भर में लाखों लोगों की मृत्यु हर वर्ष किसी महामारी के समान ही हो जाती है।दूसरे शब्दों में,जलवायु परिवर्तन प्रदूषण का ही प्रतिफलन है।

इस ग्लोबल संकट का समाधान क्या है?, क्या 'यू–टर्न'ले लिया जाए, इस 'अपेक्षाकृत ज्यादा बुरे' जीवन से। कुछ–कुछ इसी भावदशा में आगे बढ़ते हुए, प्रकृति के इतिहासकार के तौर पर प्रसिद्ध रहे, रिचर्ड ग्रोव ने

विषय–अनुशासनों के पार जाते हुए आधुनिक इतिहास और पर्यावरण के मध्य एक सेतु बनाया। जहाँ खड़े होकर उन्होंने स्थापना दी कि हमारी धरती के इस संकट (आधुनिक पारिस्थितिकी) की जड़ें औपनिवेशिक काल से संबद्ध हैं। उन्होंने साम्राज्य और पारिस्थितिकी के बारे में बड़ा सवाल उठाते हुए चेताया कि ग्लोबल वार्मिंग और पारिस्थितिकी के दुष्प्रभावों से हमारी धरती त्रस्त है। उन्होंने ध्यान आकृष्ट किया कि इस अभिशप्त पड़ाव के लिए आम आदमी नहीं बल्कि राष्ट्र–राज्यों की साम्राज्यवादी राजनीति उत्तरदायी है। कह सकते हैं कि औपनिवेशिक काल से ग्लोबल वार्मिंग का ज्ञान था और उस पर अध्ययन भी किया गया था। परन्तु शुरूआती चेतावनी के संकेतों को अनदेखा कर दिया गया,जिसके परिणामस्वरूप बीसवीं शताब्दी में दुनियाभर में अनेक प्राकृतिक आपदाएँ आई।

ग्रोव रिचर्ड के चिंतन के अनुक्रम में दुनियाभर के पर्यावरणविदों ने जलवायु परिवर्तन पर अनुसंधान किया। उनके ये प्रयास इस धरती के संरक्षण के लिए एक नई 'उम्मीद–ए–सहर' को जमीन पर उतारने जैसे रहे। इस संदर्भ में वैश्विक पर्यावरण संरक्षण संगठनों की बड़ी भूमिका रही है। सयुंक्त राष्ट्र संघ की ओर से सन् 1992 में एक वैश्विक शिखर सम्मेलन 'अर्थ सबमिट'(United Nations Conference on Environment and Development) ब्राज़ील के रियो–द–जेनेरियो शहर में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में दुनिया के अनेक देशों के प्रतिनिधि जलवायु परिवर्तन की चुनौती पर चर्चा के लिए एकत्रित हुए थे। जलवायु परिवर्तन के खतरों की परवाह करते हुए, धरती पर जीवन को बचाने के लिए इस सम्मेलन ने आगे का मार्ग प्रशस्त किया। इस दिशा में सन 1994 में 'यूएनएफसीसीसी' (United Nations Framework Convention on Climate Change)लागू हुआ, जिसके आधार पर सहमत सदस्य देशों ने निर्णय लिया कि हर वर्ष दुनिया के अलग अलग शहरों में, जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर बैठक सीओपी (Conference of Parties) की जाएंगी। पहली सीओपी सन् 1995 में बर्लिन में हुई। तीसरी बैठक क्योटो प्रोटोकॉल के नाम से जानी जाती है, जिसमें आशंका व्यक्त की गयी कि धरती का तापमान अगले सौ वर्षों में 4 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा बढ़ सकता है। परिणाम स्वरूप छोटे–छोटे द्विपीय देश (जैसे मालदीव, फ़िजी आदि)व तटीय देशों की भूमि समुद्र में डूब जाएगी। विकसित देशों के कार्बन उत्सर्जन को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया गया। इस प्रोटोकॉल में विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन निर्धारित करने के लिए विकसित देशों को अंतरराष्ट्रीय कानूनी संधि के दायरे लाया गया।

इस दिशा में सन् 2015 की सीओपी–21 वीं बैठक– पेरिस जलवायु समझौता–बहुत ही उल्लेखनीय है। यह समझौता 197 सदस्य देशों की जलवायु परिवर्तन पर कानूनी रूप से बाध्यकारी अंतर राष्ट्रीय संधि है। यह उन व्यवसायों, शहरों और अन्य गैर–राज्य अभिकर्ताओं को एक सार्थक मंच उपलब्ध कराता है जो जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए प्रयास कर रहे हैं और सरकारों का समर्थन करने एवं कार्बन उत्सर्जन को कम करने तथा आवश्यक प्रणालीगत परिवर्तन के प्रयास कर रहे हैं। इस समझौते का मुख्य ध्येय है–पूर्व–औद्योगिक स्तरों की तुलना में सन् 2050 से 2100 तक ग्लोबल वार्मिंग को 2 डिग्री सेल्सियस से कम करना व इसे अधिकतम 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करना। वर्ष 2050 से 2100 के बीच मानव गतिविधियों द्वारा उत्सर्जित ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को उस स्तरतक लाना ताकि जंगलों, महासागरों द्वारा इसे प्राकृतिक रूप से अवशोषित किया जा सके।

हाल ही में, दिसंबर 2020 में पेरिस समझौते की पाँचवीं वर्षगाठ स्कॉटलैंड में आयोजित हुई। इस अवसर पर बहुत से देशों द्वरा जलवायु परिवर्तन को कम करने और इसके शमन के लिए अपना योगदान प्रस्तुत किया गया। लेकिन ये योगदान पेरिस समझौते की आशा अनुरूप नही रहे। पर्यावरणविदों का मानना है कि ये योगदान मूलतः 2 डिग्री सेल्सियस की सीमा से नीचे पहुँचने के लिए अपर्याप्त हैं और निर्धारित 1.5 डिग्री सेल्सियस

तापमान की सीमा से अधिक हैं । इसका कारण है कि कई देशों के नेट ज़ीरो उत्सर्जन लक्ष्यों में या तो जवाबदेही का अभाव है या फिर उनकी जवाबदेही नाममात्र है। बहुत से देशों ने अपने 'नेट जीरो" उत्सर्जन लक्ष्यों को अभी तक पेरिस समझौते के तहत राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) तथा दीर्घकालीन रणनीतियों के अनुरूप नहीं बनाया है। अमेरिका, जो सबसे बड़ा उत्सर्जनकर्ता है, ने इस मुद्दे को ही अपनी घरेलू राजनीति का हिस्सा बना दिया। पूर्व राष्ट्रपति ट्रम्प ने इस समझौते से अमेरिका को अलग करवा लिया था। परंतु अमरीका के नए राष्ट्रपति बाइडन ने अमेरिका को समझौते में पुनः सम्मिलित करवाया है। इस प्रकार देख सकते हैं कि विकसित देश पर्यावरण की चिंता को ताक पर रखकर अपने हितों को सर्वोपरि मानते रहे हैं। इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण कार्यक्रम की एक रिपोर्ट बताती है कि जी–20 समूह के देश जो विश्व ग्रीन हाउस गैस के 80% उत्सर्जन के लिए उत्तरदायी हैं,पेरिस समझौते लक्ष्यों को पूरा करने में अभी बहुत पीछे हैं।

जलवायु संकट की छाया को हम इन रूपों में देख सकते हैं कि वर्ष 2020, पिछले तीन वर्षों की तुलना में सबसे गर्म रहा। 2011–20, अभी तक का सबसे गर्म दशक माना गया। 2020, जंगलों की आग के बढ़ने के अलावा भूमि और समुद्रों में विशेष रूप से आर्कटिक का तापमान बढ़ने के मामले में शीर्ष पर रहा। पृथ्वी की जलवायु के उथल–पुथल होने के बावजूद 2020 में जी–20 के देशों ने अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने के इरादे से लगभग 230

अरब डॉलर का निवेश, कोयले जैसे जीवाश्म ईंधन में करने की प्रतिबद्धता दिखाई, तो दूसरी तरफ स्वच्छ ऊर्जा में केवल 150 अरब डॉलर। इन देशों की ऐसी नीतियों ने पृथ्वी के तापमान को 3.2° बढ़ा दिया है, जो बहुत ही चिंताजनक है। हमारे वायुमंडल में प्रचुर मात्रा में पाई जाने वाली ग्रीनहाउस गैसों (कार्बनडायऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रसऑक्साइड आदि) की मात्रा जलवायु परिवर्तन के मापदंड हैं। जानकारों का मानना है कि पृथ्वी के लाखों वर्ष के इतिहास के दौरान इनका स्तर व्यापक रूप से बढ़ा है। पर्यावरणविदों का दावा है कि ऐतिहासिक रूप से विकसित देशों का इसमें मुख्य योगदान रहा है जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका 25%, यूरोपीय संघ 22% और चीन 13%। जबकि कार्बन उत्सर्जन में भारत की हिस्सेदारी केवल 3% है।

तीसरी दुनिया के बहुत से विकासशील व गरीब देशों का उत्सर्जन तो अभी भी शून्य स्तर पर ही है। विकसित देशों की तुलना में भारत समेत तीसरी दुनिया के देशों का प्रतिव्यक्ति कार्बन उत्सर्जन बहुत कम है। फिर भी ये देश सबसे अधिक जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो रहे हैं। विगत वर्षों में उत्तराखंड के तेजी से पिघलते ग्लेशियर केरल, तमिलनाडु, बिहार की भीषण बाढ महाराष्ट्र, बुंदेलखण्ड में भयंकर सूखा तटीय प्रदेशों में आने वाले तूफानों की तबाही जैसी कई आपदाओं के रूप में लगातार जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को भारत झेलता रहा है। कहा जा सकता है कि विकसित देशों के जलवायु संरक्षण के प्रति ढुलमुल या कम प्रतिबद्धता के रवैये की कीमत विकासशील देशों को प्राकृतिक आपदाएँ झेलकर चुकानी पड़ रही है, जिनसे भारी जान–माल की क्षति होती है। यानि करे कोई और भरे कोई। कुल मिलाकर हमारा देश इस ग्लोबल संकट में समस्या का हिस्सा नहीं है बल्कि इस संकट के समाधान में अपना योगदान देता आया है। हमारे देश ने इस दिशा में प्रतिबद्धता के साथ कुछ कदम उठाए हैं ।

जैसे–

- पेरिस समझौते के अनुसार भारत ने अपने राष्ट्रीय अनिवार्य योगदान (एनडीसी) के लिए आर्थिक विकास में निम्न कार्बन उत्सर्जन का मार्ग अपनाया गया है। देश ने वर्ष 2030 तक सकल घरेलु उत्पाद (जीडीपी) के अनुपात में उत्सर्जन तीव्रता, वर्ष 2005 के स्तर से भी 33–35% तक नीचे ले जाने का लक्ष्य रखा है।
- गैर–जीवाश्म इंधनों से प्राप्त बिजली की संयुक्त उत्पादन क्षमता वर्ष 2030 तक करीब 40% तक बढ़ाने का लक्ष्य है। इसके लिए राष्ट्रीय सौर मिशन व राष्ट्रीय पवन–सौर हाइब्रिड नीति के अंतर्गत केंद्र व राज्य सरकारें पहल कर रही हैं। इसका उद्देश्य भारत की ऊर्जा चुनौती को संबोधित करते हुए पारिस्थितिक रूप से स्थायी विकास को बढ़ावा देना है।
- भारत स्टेज (बीएस) VI मानदंड : वायु प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए वर्ष 2020 से लागू किया है। पुराने व अनफ़िट वाहनों को सड़कों से हटाने के लिए स्वैच्छिक स्क्रैपिंग नीति लाई गई है। निजी वाहनों को 20 वर्ष बाद और वाणिज्यिक वाहनों को 15 वर्ष बाद अनिवार्य रूप से ऑटोमेटेड फिटनेस सेंटर में ले जाना होगा।
- उज्ज्वल योजना से आठ करोड़ लाभार्थियों को लाभ पहुँच चुका है। इसे एक करोड़ और लाभार्थियों तक पहुंचाना है।
- वायु प्रदूषण के नियंत्रण के लिए शहरों में सिटी बस सेवा व मेट्रो शहरों के उपनगरीय इलाकों और टियर –2 शहरों तक मेट्रो रेल नेटवर्क का विस्तार करना।
- कागज का सीमित उपयोग : इसके लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म/ माध्यमों (ई–प्रशासन, ई–बैंकिंग आदि) को बढ़ावा देना।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि तीव्र गति से होते जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर सभी देशों को, अपनी अर्थव्यवस्थाओं में कार्बन कमी की नीति को जल्द से जल्द अपनाना होगा। इसके लिए वैश्विक एकजुटता और सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है। जो देश अपनी आर्थिक नीतियों को जलवायु संरक्षण के अनुकूल बना लेंगे, वे न केवल स्वच्छ वायु, ऊर्जा सुरक्षा, प्रतिस्पर्धात्मक विकास के नए अवसरों के साथ अग्रणी रहेंगे, बल्कि जलवायु ग्लोबल संकट के सम्मुख धरती के जीवन की संभाव्यता को बढ़ाएँगे। यह केवल पर्यावरण व आर्थिक विकास की संतुलनकारी नीतियों से ही संभव हो सकता है। महात्मा गांधी कहते हैं कि "धरती मनुष्य की आवश्यकताओं की तो पूर्ति तो आसानी से कर सकती है मगर उसके लालच की नहीं।"वस्तुतः यह कथन आज इतना प्रासंगिक है कि प्रत्येक व्यक्ति, समाज व देश को इसे अनिवार्य जीवन–दर्शन के रूप में अपनाना चाहिए। जलवायु संकट के समक्ष व्यक्ति व समाज के छोटे–छोटे प्रयासों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति यदि पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हो जाए, आवश्यक रूप से ऊर्जा संरक्षण करें,कम से कम एक पेड़ लगाए, उसे बड़ा करे तो उसके ये छोटे प्रयास अंततः ग्लोबल संकट से निपटने में सहयोग ही करेंगे। वस्तुतः आज सभी देशों में पर्यावरण बोध को नागरिक बोध के दायरे में लाने की आवश्यकता है,ताकि यह 'बंजर होती' दुनिया फिर से 'हरी' हो जाए और अंदर से नर्म भी।

सुनील कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)
स्थानीय प्रधान कार्यालय
भारतीय स्टेट बैंक, जयपुर

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

बैंक ऑफ इण्डिया

विश्व हिन्दी दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता

दिनांक 10.01.2021 को विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में 'हिन्दी यूनिकोड टायपिंग प्रतियोगिता' आयोजित की गयी जिसमें आंचलिक कार्यालय के 30 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण–पत्र एवं पुरस्कार से सम्मानित करते हुए उप–आंचलिक प्रबंधक श्री के. के. मिश्रा एवं मुख्य प्रबन्धक श्रीमती पूजा माथुर।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

आंचलिक कार्यालय में दिनांक 08 मार्च 2021 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में सहायक महाप्रबंधक सुश्री दीप्ति अग्रवाल, उप–आंचलिक प्रबन्धक श्री के. के. मिश्रा एवं जयपुर शहर–शाखाओं की विभिन्न महिला स्टाफ सदस्य शामिल हुई। मुख्य अतिथि के तौर पर पंखुड़ी गौतम पाठक, सामाजिक कार्यकर्त्ता डॉ शालिनी माथुर एवं मार्शल आर्ट क्षेत्र में गोल्ड मेडलिस्ट रुचि गौड़ उपस्थित रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता आंचलिक प्रबन्धक महोदय श्री वैभव आनंद ने की। कार्यक्रम में मंच संचालन मुख्य प्रबन्धक श्रीमती पूजा माथुर ने किया।

गणतंत्र दिवस समारोह

गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में आंचलिक कार्यालय परिसर में झंडारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। झंडारोहण आंचलिक प्रबंधक श्री वैभव आनंद द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न शाखाओं एवं आंचलिक कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर आंचलिक कार्यालय के सुरक्षा प्रहरियों को भी सम्मानित किया गया।

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया

महिला दिवस दिनांक 08.03.2021 के आयोजन में बैंक की महिला साथियों के मध्य विचार गोष्ठी का आयोजन.

कोरोना महामारी के दौरान सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन के क्रम में पुलिस कर्मियों को जलपान कराते हुए सेंट्रल बैंक के कर्मचारी।

22.02.2021 को सेंट्रल बैंक के राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा सचिव श्री सुमित जैरथ से उत्कृष्टता पुरस्कार लेते हुए श्री पी ए गौड़।

सेंट्रल बैंक द्वारा आयोजित राजभाषा हिंदी संबंधी प्रदर्शनियाँ

सदस्य बैंकों की गतिविधियाँ

नाबार्ड

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, आईसीएआर अनुसंधान केन्द्रों तथा प्रमुख बैंकों के साथ परिचर्चा बैठक-18 जवनरी 2021 को संबोधित करते हुए श्री जयदीप श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय

नाबार्ड के सहयोग से बड़ौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक को तीन नए मुद्रा रथों / वित्तीय साक्षरता वाहन के लिए 45 लाख रुपये की सहायता

वित्तीय समावेशन निधि के अंतर्गत राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक को संस्वीकृत मोबाइल वैन का लोकार्पण दिनांक 31 मार्च 2021 को श्री जयदीप श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय ने प्रांगण में हरी झंडी दिखाकर किया गया।

एग्रीक्लीनिक एवं एग्रीबिजनस केंद्र योजना (ACABC) पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला दिनांक 17 फरवरी 2021 को संबोधित करते हुए श्री कुलदीप सिंह, महाप्रबंधक, नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय तथा मंचासीन, श्री टी वेंकटा कृष्णा, महाप्रबंधक, नाबार्ड, श्रीमती मंजु खुराना, उप महाप्रबंधक, नाबार्ड, श्री सी पी अग्रवाल, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा

राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक और बड़ौदा राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के कार्यनिष्पादन की समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए श्री कुलदीप सिंह, महाप्रबंधक, नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों की बिक्री सह प्रदर्शनी का श्रीमती अरुणा चौधरी, प्रिन्सिपल, विधि कॉलेज, राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा उद्घाटन

वित्तीय समावेशन में बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट (बीसी) एजेंट की भूमिका

वित्तीय समावेशन का अर्थ केवल प्रत्येक शहर या प्रत्येक गाँव को बैंकिंग से जोड़ने तक ही सीमित नहीं है अपितु हर बैंकिंग सुविधा रहित क्षेत्र में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराना है फिर चाहे उस क्षेत्र में जनसँख्या घनत्व कम हो या वह क्षेत्र दूर दराज स्थित हो.

सुदूर एवं कम जनसँख्या वाले क्षेत्रों में बैंक की शाखाएं खोलना व्यावसायिक एवं व्यावहारिक रूप से संभव नहीं हो पाता अतः इसके विकल्प के रूप बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट को यह कार्य दिया गया एवं बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट ने यह जिम्मेदारी बखूबी निभाई है. राजस्थान में पाकिस्तान सीमा तक बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट अपनी सुविधाएँ प्रदान कर रहे हैं।

बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट बैंकिंग सुविधा रहित क्षेत्र में स्पोंसर बैंक के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते है एवं स्थानीय ग्रामीण, अशिक्षित, कम पढ़े लिखे लोगो को बैंकिंग सेवाएँ मुहैया करवाते हैं.

बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर कियोस्क बैंकिंग सोल्यूशन (KBS) पोर्टल होता है जिसके माध्यम से ऑनलाइन रियल टाइम बैंकिंग सुविधाएं प्रदान की जाती हैं. ये सुविधाएँ बेसिक, आधार कार्ड पर आधारित, RUPAY कार्ड पर आधारित, जनसुरक्षा योजनाएँ तथा वैल्यू एडेड सुविधाएँ है ।

(1) बेसिक सुविधाएं :–

- नए खाते खोलना,
- प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 10000 / – रु. तक का राशि आहरण
- प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 25000 / – रु. तक की राशि जमा कराना
- प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 25000 / – रु. तक की राशि का अंतर बैंक या अंतरा बैंक अंतरण
- अंतिम 10 लेन–देन का मिनी स्टेटमेंट
- बैलेंस इन्क्वारी

बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर खुला हुआ खाता सामान्य सीबीएस खाता ही होता है जैसा कि शाखा में खोला जाता है.

(2) उक्त सभी सुविधाएँ आधार संख्या पर आधारित भी हो सकती है इसमें नया खाता के लिए ई–केवाईसी की आवश्यकता होती है ।

खाते में आधार सीडिंग कराने के पश्चात् खाता । EPS (Aadhar Enabled Payment System) द्वारा पेमेंट के लिए मान्य हो जाता है इसमें (संबंधित बैंक या दूसरा बैंक) पेमेंट हो सकता है.

- आधार द्वारा SHG खातों में भी लेन देन किया जा सकता है.

(3) रूपे डेबिट कार्ड ट्रांसजेक्शन, माइक्रो एटीएम की सहायता से किया जाता है. कार्ड द्वारा राशि आहरण प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 25000 / – रु. तक किया जा सकता है.

(4) जन सुरक्षा योजनाएं :– ये सूक्ष्म बीमा योजनाएं हैं:

- अटल पेंशन योजना:– इसमें 18 से 40 साल तक का व्यक्ति एनरोलमेंट करा सकता है एवं 60 साल के बाद 1000 से 5000 तक की पेंशन मिलती है (जैसा प्लान ग्राहक ने चयनित किया है)
- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (PMJJBY):– इसमें 18 से 50 साल तक का व्यक्ति एनरोलमेंट करा सकता है, इस बीमा पालिसी में 2 लाख तक का जीवन बीमा है।
- प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY): – इसमें 18 से 70 साल तक का व्यक्ति एनरोलमेंट करा सकता है, इस बीमा पालिसी में 2 लाख तक का दुर्घटना बीमा है ।

(5) बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर पास बुक प्रिंटिंग भी करा सकते हैं.

(6) वैल्यू एडेड सुविधाएँ:–

- इंटरसोल ट्रांसजेक्शन
- इंडो नेपाल ट्रांसजेक्शन
- MBFD:& PNB multi benefit term deposit

शाखा में होने वाली फिक्स्ड डिपाजिट का दूसरा रूप MBFD है. सभी आवश्यक डिटेल्स भरने के बाद बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन से MBFD की पावती मिल जाती है, परन्तु एफडीआर रसीद मूल शाखा से ही प्राप्त कर सकते है. इसके अलावा पेमेंट, क्लोजर, समयपूर्व पेमेंट, नॉमिनी के नाम में बदलाव, एफडी के विरुद्ध ओवरड्राफ्ट या डिमांड लोन के लिए आधार शाखा से ही संपर्क करना होता है.

- पीएनबी संचय:– यह एक माइक्रो डिपाजिट योजना है ग्रामीण इलाकों में छोटी बचत की आदत को विकसित करने के लिए यह योजना लायी गयी है. यह योजना शाखा में की जाने वाली आरडी की तरह ही होती है.

इसमें न्यूनतम 50 / – रु या इसके गुणा में अधिकतम 5000 / – तक की राशि प्रतिमाह एवं 60000 तक की राशि वार्षिक जमा करा सकते है. इसका समय 1 वर्ष से 3 वर्ष तक का हो सकता है.

इस योजना में यदि कोई इनस्टॉल में छूट जाती है तो कोई पेनल्टी नहीं है. समयपूर्व क्लोजर का प्रावधान नहीं है परन्तु स्पेशल केस में कर सकते है परन्तु इसके लिए कुछ शर्तें है जैसे कि PNB संचय में खाता खोलने से 3 महीने तक क्लोजर नहीं हो सकता, 6 महीने तक के क्लोजर पर कोई ब्याज नहीं मिलता ।

IMPS (Immediate Payment Service)

शाखाओं में होने वाली NEFT एवं RTGS का दूसरा रूप IMPS है जो बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर उपलब्ध है। इसके सर्विस चार्जेज 10000/– तक 1.74%, न्यूनतम 22 रु और अधिकतम 87 रु. है.

10001 से 25000 तक 0.87%, न्यूनतम 109 रु. है.

IMPS के निम्नलिखित लाभ हैं

- **तुरंत फण्ड ट्रान्सफर होता है**
- **समय की बचत होती है**
- **उपयोग में सरल होता है**
- **सुरक्षित एवं विश्वसनीय है.**
- **राशि भेजने वाले एवं प्राप्त करने वाले को तत्काल पुष्टि मिल जाती है.**

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि बैंक के व्यवसाय वृद्धि में बैकिंग कोरेस्पोंडेंट की महत्वपूर्ण भुमिका होती है ।

रिचा बंसल
उप–प्रबंधक, पीएनबी
अंचल कार्यालय, जयपुर

कहना जरूर

कभी जो आये मन में कोई बात
उसे कहना जरूर
न करना वक्त का इंतजार
न होना मगरूर।

जब पिता का किया कुछ
दिल को छू जाये
तो जाकर गले उनके
लगना जरूर।

बनाये जब माँ कुछ तुम्हारे मन का
कांपते हाथों को
चूम लेना जरूर।

जब अस्त व्यस्त होके बीबी
भूल कर खुद को
घर संवारती नजर आये
तो धीरे से उसके कानों में
'बहुत खूबसूरत हो' कहना जरूर

आये जूझ कर दुनिया से
हमसफर जब भी
न करना वक्त का इंतजार
न होना मगरूर
कभी जो आए, मन में
कोई बात उसे कहना जरूर।

किरण मीणा
वरिष्ठ प्रबंधक, यूको बैंक
अंचल कार्यालय, जयपुर

स्वामिभक्ति एवं वीरता के अग्रदूतः पन्नाधाय एवं वीर दुर्गादास

इतिहास में जब भी राजस्थांन का नाम आता है राजस्थान की शौर्यगाथाओं एवं राजस्थानी संस्कृति की झलक दिखती है। वहीं, राजस्थान के स्वाामिभक्त, लेखक, रचनाकार, शिक्षाविद्, चित्रकार, संगीतज्ञ की भी अपनी पहचान है। हम राजस्थान के स्वामीभक्त एवं वीर में से कुछ रत्नों एवं उनके योगदान को संक्षेप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पन्नाधाय (त्याग की प्रतिमूर्ति) : वीरों की धरती राजस्थान के इतिहास में त्याग, बलिदान और देशभक्ति का जब भी जिक्र आता है तो पन्नाधाय के नाम को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मेवाड़ के इतिहास में जिस गौरव से महाराणा प्रताप का नाम लिया जाता है उसी गौरव व श्रद्धा के साथ पन्ना धाय का नाम भी लिया जाता है। पन्ना ने लगभग पांच सदी पूर्व मेवाड़ के तत्कालीन भावी शासक उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करने हेतु अपने पुत्र को बलिदान कर दिया था। त्याग और स्वामिभक्ति की यह गाथा इतिहास के पन्नों में हमेशा अंकित रहेगी। पन्ना धाय राणा साँगा के पुत्र राणा उदयसिंह की धाय (माँ) थीं। पन्ना धाय किसी राजपरिवार की सदस्य नहीं थीं। अपना सर्वस्व स्वामी को अर्पण करने वाली वीरांगना पन्ना धाय का जन्म कमेरी गावँ में हुआ था। राणा साँगा के पुत्र

उदयसिंह को माँ के स्थान पर दूध पिलाने के कारण पन्ना 'धाय माँ' कहलाई थी। पन्ना का पुत्र चन्दन और राजकुमार उदयसिंह साथ–साथ बड़े हुए थे। उदयसिंह को पन्ना ने अपने पुत्र के समान पाला था। पन्नाधाय ने उदयसिंह की माँ रानी कर्मावती के सामूहिक आत्म बलिदान द्वारा स्वर्गारोहण पर बालक की परवरिश करने का दायित्व संभाला था। वह चित्तौड़ के कुम्भा महल में रहती थी। पन्ना ने पूरी लगन से बालक की परवरिश और सुरक्षा की।

बात उस समय की है जब मेवाड़ की गद्दी हथियाने के उद्देश्य से षडयंत्रकारी बनवीर ने एक रात उदयसिंह के पिता महाराजा विक्रमादित्य की हत्या करवा दी। इसके बाद वह नन्हें उदयसिंह को मारने उसके महल की ओर चल पड़ा। एक विश्वस्त सेवक द्वारा पन्ना धाय को इसकी पूर्व सूचना मिल गई। अपने आश्रय में पल रहे उदयसिंह को मारने की बात पन्ना धाय को चली तो पन्ना धाय ने चतुराई से एक खास सेवक के हाथों एक टोकरी में रखकर महल से बाहर भिजवा दिया और उदयसिंह के पलंग पर अपने बेटे चंदन को सुला दिया। बनवीर ने चंदन को उदयसिंह समझकर मार डाला। जब इस घटना के बारे में कल्पना की जाती है तो सभी के दिलों में भी दर्द का अहसास हो जाता है कि पन्ना ने अपने आंखों के सामने अपने पुत्र की हत्या होते देखी और बनवीर को शक न हो इस कारण चीख तक नहीं निकाली। समय बीतता चला गया और उदयसिंह 1542 में मेवाड़ के महाराणा बन गए। लेकिन पन्ना के बलिदान की इस गाथा के बिना राजस्थान का इतिहास अधूरा ही है।

वीर दुर्गादास : अपनी जन्मभूमि मारवाड़ को मुगलों के आधिपत्य से मुक्त कराने वाले वीर दुर्गादास राठौड का जन्म 13 अगस्त, 1638 को ग्राम सालवा में हुआ था। अपनी वीरता और कूटनीति से उन्हों ने मुगल शासक औरंगजेब की नींद उड़ा दी थी। मारवाड़ के शासक जसवंत सिंह के निधन के बाद जन्में उनके पुत्र अजीत सिंह को दुर्गादास ने न केवल औरंगजेब के चंगुल से बचाया बल्कि उनके वयस्क होने पर उन्हें शासन की बागडौर सौंपने में भी मदद की। दुर्गादास के पिता मारवाड़ राज्य के दीवान थे। पारिवारिक कारणों से गांव लूणवा में रहते थे। दुर्गादास का लालन–पालन उनकी माता ने ही किया। उनकी माता ने उन्हें अपने देश पर बलिदान होने के संस्कार दिए। औरंगजेब ने दुर्गादास को अनेक षडयंत्रों के माध्यम से मरवाना चाहा लेकिन संभव नहीं हुआ। जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने जोधपुर रियासत पर कब्जा कर वहां शाही हाकिम बैठा दिया। उसने अजीतसिंह को मारवाड़ का राजा घोषित करने के बहाने दिल्ली बुलाया। अजीतसिंह के साथ दुर्गादास भी गए। अजीत सिंह को बंधक बनाने के प्रयास को विफल करते हुए दुर्गादास जोधपुर आ गए और अजीत सिंह को सिरोही के पास कालिन्दीर गांव में छुपा दिया। औरंगजेब ने दुर्गादास को पकड़ने के बहुत प्रयास किए किन्तु सफलता नहीं मिली। अपनी छापामार युद्ध पद्धति के बल पर दुर्गादास ने मुगलों को खूब छकाया। वीर दुर्गादास के बारे में वर्णन करने से पूर्व मध्यकालीन भारत मे इस्लामीकरण की आंधी को रोकने के लिए उनके संघर्ष का साक्ष्य तत्कालीन कवि द्वारा लिखा ये दोहा है ।

आठ पहर चौसठ घड़ी घुड़ले उपर वास।
सैल अणि सूं सैकतो बाटी दुर्गादास।

दोहे का भावार्थ जानने पर रुह कांप जाती है कि कितना कठिन संघर्ष किया ओर सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है कि धन्य है मारवाड़ की धरा जहाँ ऐसे धर्म रक्षक ने जन्म लिया । इतिहास गवाह है कि औरंगजेब के पुत्र ने जब अपने पिता के विरूद्ध विद्रोह आरंभ किया और राजपूतों के साथ मिल गया तब औरंगजेब ने अपने पुत्र एवं पुत्री बुलंद अख्तर एवं सफीयतुन्निसा की सुरक्षा हेतु दुर्गादास से अनुरोध किया। इन दोनों की परवरिश में दुर्गादास ने जिस उत्तम चरित्र एवं सांप्रदायिक सदभाव का परिचय दिया, उसने मानवीयता की मिसाल कायम की। दुर्गादास ने न केवल उन्हें सुरक्षा दी वरन इस्लाम रीति–नीति से उनके अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था भी की। जब औरंगजेब को दुर्गादास की उदारता एवं मानवीयता का पता चला तो उसे अपना मित्र मानने लगा।

इसके विपरीत अजीतसिंह दुर्गादास के बढ़ते प्रभाव एवं यश से जलने लगे। महाराजा अजीतसिंह और दुर्गादास में टकराव की स्थितियां बन गई। औरंगजेब की मृत्यु होने पर अजीतसिंह गद्दी पर बैठे और रियासत प्रधान पद देने की पेशकश की तो दुर्गादास ने रियासत का प्रधान पद अस्वीकार कर दिया। जीवन के उत्तरार्द्ध में दुर्गादास मारवाड़ को छोड़कर सुख एवं सम्मानपूर्ण जीवन जीने की आस में उदयपुर चले गए और कभी लौटकर मारवाड़ नहीं आए। उदयपुर से वे उज्जैन चले गए। जहां भगवान का ध्यान लगाते समय उनका निधन 22 नवम्बर 1718 को हो गया। दुर्गादास की जीवटता एवं गंभीरता का प्रमाण यह है कि उन्होंने अपने क्षत्रिय धर्म को एक पल के लिए भी विस्मृत नहीं होने दिया। दुर्गादास किसी जाति विशेष के दुश्मन नहीं थे वरन उनकी मातृभूमि पर हमला करने वाला व्यक्ति उनका दुश्मन था, जिनका सामना करने के लिए उनकी दुधारी तलवार सदैव चमकती रहती थी। ऐसे वीर सपूत को राजस्थान की धरा सदैव स्मरण करती रहेगी।

पी.ए.गौड़
वरिष्ठ प्रबंधक, क्षे.का.
सेंट्रल बैंक, जयपुर

खेल खिलाड़ी (ओलम्पिक स्पेशल)

''खेलोगे कूदोगे बनोगे नवाब'' जी हाँ आजकल टी.वी. न्यूज पेपर देखकर तो ऐसा ही लगता है । अखबारों के फ्रंट पेज पर तथा न्यूज चैनलों के प्राइम टाइम पर खेल की खबरें खिलाडियों के इंटरव्यू अब आम बात है । स्पोर्टस चैनलों की भरमार हो गई है। हर खेल की अपनी लीग है। आई.पी.एल. की तरह कबड्डी, बैडमिंटन और फुटबाल लीग भी पॉपुलर है। मेरीकॉम, भाग मिल्खा भाग, धोनी और दंगल जैसी खेल आधारित फिल्में बॉक्स ऑफिस में अति सफल रही है। कोहली, धोनी, साइना, सिंधु का जलवा सुपरस्टार से कम नही है। ऐसे चमकदार माहौल में आजकल माँ–बाप भी बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे हैं कि वो भी खेल में नाम कमाएँ । लगभग हर शहर के सरकारी स्टेडियम व प्राइवेट एकेडमी में बच्चों की भीड है, लोग मुहमांगी फीस दे रहे हैं। सुविधाएँ भी बढ़ी है। खेलों का इन्फ्रास्ट्रक्चर भी अच्छा हो गया है। बस यही एक ''लोचा'' है।

माँ–बाप को लगता है उनका बच्चा जल्द से जल्द सचिन, सायना, विजेन्द्र, सुशील या बाईचिंग भूटिया बन जाए। खेल वह खिलाड़ी में धैर्य की बहुत जरूरत होती है। अनवरित कठिन परिश्रम, लगन, हूनर, शारीरिक बनावट, एकाग्रता, फिटनेस, बैलेंस डाइट, विल पावर ये बस जिस खिलाड़ी के पास होता है और तब उसे सही प्रशिक्षण और सुविधाएँ मिलें, साथ में थोडा सा भाग्य भी साथ दे, तब जाकर एक सफल खिलाड़ी बनना संभव है, यदि वो इंजरी फ्री रहे तो।

यही खिलाड़ी और विद्यार्थी में अंतर होता है। मैं यहाँ विद्यार्थी को कमतर नहीं आँक रहा हूँ पर जितनी मेहनत एक सफल खिलाड़ी 10–12 वर्ष करता है उनती विद्यार्थी 4–5 वर्ष भी कर दे तो उसे अच्छी नौकरी या अन्य ढेरो विकल्प मिल जाएगें वो भी बिना रिस्क जबिक खेल में वर्षो की मेहनत एक इंजरी में बेकार हो जाती है। वैसे कुछ लोग मेरी इस विवेचना से जरूर सहमत नहीं होगें। यहाँ मेरा उददेश्य खिलाडियों का गुणगान करना नहीं है, अपितु उन्हें प्रोत्साहित करने का है। लगभग 90% खिलाड़ी विभिन्न कारणों से उचित सफलता प्राप्त नहीं कर पाते है, पर जिंदगी के प्रति उनका जज्बा एक आदमी से ज्यादा प्रबल होता है क्योंकि खेल में लोग हारते–हारते जीतते है तो कभी जीतते–जीतते हारते भी है, यही तो जिंदगी का भी फलसफा है।

भारत के सबसे बड़े खिलाड़ी :
लगभग 50% लोग सचिन, गावस्कर, कपिल, धोनी, कोहली या किसी और क्रिकेटर को ही नामित करेगें। कुछ देश प्रेम में ध्यान चंद, धनराज पिल्लै, मल्का सिंह. पी.टी. उषा, विश्वनाथ आनंद, सुशील कुमार, अभिनव बिन्द्रा या साइना व सिंधु का भी नाम ले सकते है, पर भारतीय खेल पर जितना प्रभाव गोपीचन्द का है वो उन्हें अलग करता है। एक खिलाडी के रूप में वो दोनों घुटनों के ऑपरेशन कराने के बावजूद विश्व के टॉप प्लेयर बने, पर उनका योगदान कहीं ज्यादा एक कोच के रूप में है। सिंधु, साइना, श्रीकांत कश्यप और कई खिलाडियों को चैपियन बनाने में गोपी का योगदान उत्कृष्ट है। उन्होनें पूरे सिस्टम को चेंज किया और ऐसा ढांचा विकसित कर दिया है कि खिलाड़ी देश का नाम ऊंचा कर रहे हैं। ओलम्पिक मैडल और विश्व प्रतियोगिताएँ के पदक भी आ रहे हैं।

चूकिं वो लेखक के समकालीन खिलाड़ी रहे हैं, अतएव मुझे पता है कि अपने खेल की बुलंदी पर उन्होनें सचिन के साथ एक कोल्ड ड्रिंक का विज्ञापन करने से मना कर करोड़ों ठुकरा दिए थे, क्यों कि वो मानते थे कि कोल्ड ड्रिंक्स बच्चों की सेहत के लिए ठीक नही है।

विश्व के सबसे बड़े खिलाड़ी :
जैसेः ओवेंस कार्ल लुइस (एथलेटिक्स), मार्क फैल्पस (तैराकी), सेरेना, फेडरर, नडाल, जोकोविच, नपटानिलोवा (टेनिस), नाडिया (जिम्नास्टिक) लिन डेन (बैडमिंटन), मोहम्मद अली व माइक टायसन (बॉक्सिंग) मेराडोना, पेले, मैसी (फुटबाल) ''सभी एक से बढ़कर एक'' पर जितना धमाल उसेन बोल्ट ने किया उसका कोई सानी नहीं। खेल में सब रिकॉर्ड टूटते हैं, पर तीन ओलंपिक कि तीन सबसे प्रतिष्ठित प्रतियोगिता अर्थात 100मी, 200मी और 100मी रिले रेस में 9 स्वर्ण पदक ये लगभग असंभव सा रिकॉर्ड है।

कटु सत्य : ब्रैडमेन आखिरी पारी में शून्य पर आउट हुए, सचिन अपने बचपन के सपने अर्थात वर्ल्ड कप जीतने वाला फाइलन मैच नही खेल पाए, उसी तरह बोल्ट अपनी आखिरी प्रतियोगिता वर्ल्ड चैपियनशिप में 100 मी का रेस हार गये।

पुनःश्चः साग्रह निवेदन है कि बच्चे– बच्चियों को आउटडोर गेम खिलायें, शारीरिक व्यायाम करवाएँ। जिन बच्चों में जज्बा दिखे उसे प्रोत्साहित करें कि खेल में अपना भविष्य बनाएँ। ''अतः'' खेलों जी भर के''।

स्वस्थ जन तो स्वस्थ मन
स्वस्थ जन तो स्वस्थ वतन

राजेश खण्डेलवाल
स.म.प्र. सिडबी, सीतापुरा शाखा, जयपुर

ऑनलाइन शिक्षा : जरूरी या मजबूरी

शिक्षा जीवन का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है सीखाना या सिखाना होता है। शिक्षा हम किसी भी माध्यम के द्वारा ग्रहण कर सकते है । शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान को बढ़ाती है उसमें बेहतर संस्कारों का निर्माण करती है। वैसे ही आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्त करने का एक सरल तरीका है ऑनलाइन शिक्षा कोरोना महामारी के समय में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली एक वरदान की तरह है।

जैसे कि हम पारंपरिक रूप से गुरुकुल या स्कूल में जाते है और शिक्षक के सामने बैठकर ज्ञान प्राप्त करते हैं। लेकिन ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में इसे शिक्षा का नवीनतम रूप माना जाता है, हम अपने शिक्षक से इंटरनेट से मिलते हैं और लैपटॉप या मोबाइल के माध्यम से उनसे ज्ञान प्राप्त करते हैं। कोरोना महामारी के चलते बच्चों के स्कूल लगभग डेढ़ साल से बंद है। विद्यार्थियों के लिए ज्ञान प्राप्त करने का केवल एक ही माध्यम है "ऑनलाइन शिक्षा"। आज लगभग सभी छात्र ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं

इसके लिए मोबाइल, कंप्यूटर और टेब आदि का इस्तेमाल किया जा रहा है इन सभी उपकरणों को इन्टरनेट से कनेक्ट कर विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

बदलते परिवेश में टेक्नोलॉजी में भी कई बदलाव हुए है और इसके उपयोग भी बड़े हैं। टेक्नोलॉजी के वजह से शिक्षा लेने की पद्धति में भी बहुत से परिवर्तन देखने को मिले हैं। आज ऑनलाइन शिक्षा में उपयोग होने वाली शिक्षण सम्बंधित सामग्री, टेक्नोलॉजी के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जा सकती है। ऑनलाइन शिक्षा से समय बचता है। साथ ही, छात्र शिक्षा को अपने घर में आराम से ले सकते हैं। बच्चे लगातार अपने शिक्षकों को ऑनलाइन कक्षा से पढ़ने के नए तरीकों को सिखाते हैं और पढ़ने में भी रूचि रखते हैं यही नहीं ऑनलाइन शिक्षा में ट्यूशन या बड़े –बड़े कोचिंग सेंटर का खर्च भी बचता है।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ :

- ऑनलाइन शिक्षा से समय एवं धन की बचत होती है इसके लिए स्कूल और कॉलेज जाने की आवश्यकता नहीं होती है ।

- कोरोना महामारी के चलते हम घर पर बैठकर ही ज्ञान अर्जित कर सकते हैं और इन्फेक्शन से बच सकते हैं ।
- ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से विद्यार्थी घर में बैठे देश या विदेश से शिक्षा ग्रहण कर सकते है और अपनी डिग्री प्राप्त कर सकते हैं।
- छात्र कोई भी समस्या आने पर शिक्षकों से समाधान ले सकते हैं। साथ ही, किसी भी वीडियो को बार–बार देखकर या रिकॉर्ड कर के अध्ययन कर सकते है ।

ऑनलाइन शिक्षा की कमियाँ :

- ऑनलाइन शिक्षा से विद्यार्थी घर में सिमटकर रह जाता है इससे विद्यार्थी का समावेशी विकास नहीं होता ।
- कई बार घर में ही शिक्षा प्राप्त करने और मित्रों से न मिलने के कारण विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है ।
- ऑनलाइन शिक्षा मोबाइल, कंप्यूटर और इन्टरनेट पर निर्भर है जो कई ग्रामीण क्षेत्रों में मुश्किल हैं ।
- ऑनलाइन शिक्षा से छात्र खेल कूद आदि से दूर हो जाते हैं जो उनके शारीरिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है ।
- ऑनलाइन शिक्षा एक सुविधाजनक माध्यम है जो आज के परिपेक्ष्य में वरदान है। ऑनलाइन शिक्षा के कारण हमारे बच्चे कोरोना जैसी महामारी के इन्फेक्शन से बचे हुए हैं और उनकी शिक्षा में भी कोई बाधा उत्पन्न नहीं हुई है । लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना है कि कहीं बच्चे इसका गलत इस्तेमाल न करें और भ्रमित न हों।

पदमा चांदवानी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

राजस्थान के प्रमुख अभयारण्य

- रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
- सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य
- झालाना तेंदुआ अभयारण्य
- भरतपुर पक्षी विहार

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान : रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान में स्थित एक राष्ट्रीय उद्यान है जो लगभग 1330 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफलमेंफैला हुआ है। इस पार्क को 1955 में एक खेल अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था और बाद में 1980 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया।यह पार्क राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में स्थित है जो राजस्थान की राजधानी जयपुर से लगभग 130 किलोमीटर की दूरी पर है। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान पर्यटकों की सभी शैलियों के बीच एक विश्व प्रसिद्ध पर्यटन आकर्षण हैजिनमें वन्यजीव उत्साही और वन्यजीव फोटोग्राफर हमेशा से प्रथम स्थान पर बने रहते है। पार्क अपनी वनस्पतियों और जीवों के लिए

प्रसिद्ध है।रणथंभौर नेशनल पार्क रॉयल बंगाल टाइगर, तेंदुआ, नीलगाय, जंगली सूअर, सांभर, लकड़बग्घा, भालू, लंगूर, मगरमच्छ और चीतल जैसे वन्यजीवों की मेजबानी करता है। वनस्पतियों और जीव–जंतुओं के अलावा रणथंभौर नेशनल पार्क रणथंभौर किले और पदम तलाव के लिए भी प्रसिद्ध है जो पार्क के बीचोंबीच स्थित है।इस आकर्षक पार्क के सौंदर्य को देखने के लिए एवं रहने के लिये पार्क के आसपास बजट होटल से लेकर लक्जरी रिसॉर्ट्स तक भारी संख्या में विकल्प मौजूद हैं।

झालाना तेंदुआ अभयारण्य : झालाना एक आरक्षित वन क्षेत्र है जो जयपुर शहर की सीमाओ में स्थित है और 23 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। मुख्य रूप से यह रिजर्व तेंदुओं के लिए प्रसिद्ध है।तेंदुए यहाँ ज्यादा घनत्व में हैं जिस वजह से इस पार्क में उनको देखने की सम्भावना बहुत अधिक है। तेंदुए के अलावा नील गाय, लंगूर, लकड़बग्घा, हिरण, सांभर, नेवला, सांप, खरगोश जैसे अन्य वन्यजीव प्रजातियां यहां देखी जा सकती हैं। प्रवेश द्वार के पास एक सुंदर तेंदुआ व्याख्या केंद्र है जिसमें पार्क में पेशे वर फोटोग्राफर द्वारा ली गई तेंदुए की तस्वीरों का सुंदर संग्रह है और तेंदुए और उनके आवास के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी है।पक्षियों

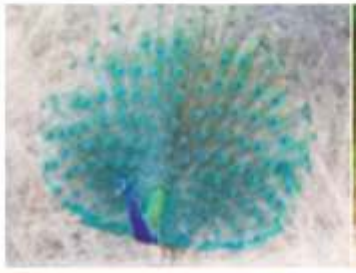

की भी अनेक प्रजातियां यहाँ देखी जा सकती है । यहां का नजारा मंत्रमुग्ध कर देने वाला है, आपको एक ही फ्रेम में पहाड़ियों और मैदानों का अहसास होता है।

सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य : सरिस्का टाइगर रिजर्व राजस्थान के अलवर जिले में स्थित टाइगर रिजर्व है।यह 881 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला है। 1955 में इसे वन्यजीव रिजर्व घोषित किया गया था और 1978 में भारत के प्रोजेक्ट टाइगर के तहत इसे टाइगर रिजर्व का दर्जा दिया गया था। वन्यजीव अभयारण्य को 1990 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था। यह पार्क जयपुर से लगभग 115 किमी और दिल्ली से 200 किमी दूर स्थित है। जंगलों में प्रमुख वृक्ष ढोक है। अन्य पेड़ों में सालार, धाक, गोल, बेर, बांस, बरगद और खैर शामिल हैं।बंगाल टाइगर के अलावा रिजर्व में तेंदुआ, जंगली बिल्ली, लकड़बग्घा, सियार, चीतल, सांभर हिरण, नीलगाय, जंगली सूअर, नेवला, शहद बिज्जू, ग्रे लंगूर

भरतपुर पक्षी विहार : केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान या केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान जिसे पहले भरतपुर पक्षी अभयारण्य के रूप में जाना जाता था, एक प्रसिद्ध अभयारण्य है जो राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित पक्षी विहार है। विशेष रूप से सर्दियों के मौसम में हजारों पक्षियों की मेजबानी करता है। यह 1971 में एक संरक्षित अभयारण्य घोषित किया गया था। यह एक विश्व धरोहर स्थल भी है। केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान जो की 29

वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला है, एक मानव निर्मित और मानव–प्रबंधित आर्द्रभूमि है और भारत के राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है।पार्क को 1982 में एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में स्थापित किया गया था। यह विविध निवास स्थान बड़ी संख्या में भारतीय पक्षियों की प्रजातियों, फूलों, मछलियों, सांपों और छिपकलियों और अन्य स्तनधारियों की प्रजातियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। अभयारण्य दुनिया के सबसे धनी पक्षी क्षेत्रों में से एक है और निवासी पक्षियों के घोंसले बनाने और पानी के पक्षियों के साथ प्रवासी पक्षियों के भ्रमण के लिए जाना जाता है।

हेमंत सिंह नेगी
वरिष्ठ शाखा प्रबंधक
ट्रांसपोर्ट नगर शाखा
यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, जयपुर

आलेख

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम-2019

हाल के कुछ वर्षों में सभी प्रकार के तकनीकों में तेजी से विकास हुआ है। 2011 से 2020 के दशक को सोशल मीडिया के उदय और इसके दिन–प्रतिदिन अधिक शक्तिशाली होते जाने के लिए याद किया जाएगा। इससे हमें अनेक प्रकार की सहूलियतें मिली हैं। लेकिन हर अच्छी बात के साथ कुछ बुराइयां भी जुड़ी होती हैं, कुछ उसी तरह, जैसे खूबसूरत और खुशबूदार गुलाब के डंठल में कांटे लगे होते हैं। बढ़ते हुए साइबर अपराधों और सोशल मीडिया के दुरुपयोग के जरिये लोगों के साथ धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाओं ने हम सबको सकते में डाल दिया था। ब्याज दर में लगातार गिरावट के इस दौर में अपनी लाभप्रदता पर भारी दबाव झेल रहे बैंकों के लिए वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों का सहारा लेना जरूरी हो गया था, लेकिन आम ग्राहक साइबर अपराधों के डर से उन्हें अपनाने में हिचकिचा रहे थे। इनके बारे में लोगों की शिकायतों को दर्ज करने और उनका निपटारा करने में हमारा पुलिस एवं न्याय का तंत्र विफल हो रहा था। पुराने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 में जो प्रावधान थे, वे इन नये तरह के अपराधों से निपटने में कारगर नहीं हो रहे थे। इसीलिए सुदीर्घ विचार–विमर्श के बाद सुचिंतित रूप से उसके स्थान पर नया उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 लाया गया, जो दिनांक 6 अगस्त 2019 से प्रभावी हो चुका है। हम इसकी प्रमुख विशेषताओं को इस लेख के माध्यम से आप तक पहुंचा रहे हैं।

8.उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की जरूरत

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया एक महत्वपूर्ण कानून है। देश भर में उपभोक्ता अदालतों में बड़ी संख्या में लंबित विवादों को तेजी से हल करने के लिए इस अधिनियम को नया स्वरूप देना जरूरी हो गया था। साथ ही, तकनीकी उन्नति के कारण बढ़ते हुए साइबर अपराधों पर लगाम लगाने के लिए नये मीडिया उत्पादों के सार्थक एवं प्रभावी उपयोग को संभव बनाने के लिए भी यह बदलाव जरूरी था।

2. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 का उद्देश्य

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 का मूल उद्देश्य उपभोक्ताओं की शिकायतों के समय पर और प्रभावी निपटारे के लिए प्राधिकरणों की स्थापना करना और उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा करना है।

3. उपभोक्ता की परिभाषा (धारा–2(7))

इस अधिनियम के अनुसार उपभोक्ता वह व्यक्ति है जो सेवाओं का लाभ उठाता है या स्वयं के उपयोग के लिए कोई भी वस्तु खरीदता है। यहां यह उल्लेख करने योग्य है कि यदि कोई व्यक्ति कोई वस्तु खरीदकर बेचता है या व्यापार के उद्देश्य से किसी सेवा का लाभ उठाता है, तो उसे उपभोक्ता नहीं माना जाता है। इस परिभाषा में ऑनलाइन और ऑफलाइन सभी प्रकार के लेन–देन शामिल हैं।

4. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 की मुख्य विशेषताएं

(1) केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) की स्थापना (धारा–3)

अधिनियम में केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण की स्थापना का प्रावधान है जो उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा, प्रचार और प्रवर्तन करेगा। केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण अनुचित व्यापार प्रथाओं, भ्रामक विज्ञापनों और उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन से संबंधित मामलों को नियंत्रित करेगा।

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण के पास उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना लगाने, सामान या सेवाओं को वापस लेने और उनके लिए प्राप्त किए गए मूल्य को वापस करने के आदेश पारित करने तथा अनुचित व्यापार प्रथाओं को बंद कराने का अधिकार होगा।

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण के पास ऐसे उल्लंघनों की जांच और जांच करने के लिए एक जांच शाखा होगी। सीसीपीए की अध्यक्षता महानिदेशक स्तर के अधिकारी करेंगे।

(2) उपभोक्ताओं के अधिकार :

अधिनियम उपभोक्ताओं को निम्नांकित 6 अधिकार प्रदान करता है ।

क) वस्तुओं या सेवाओं की मात्रा, गुणवत्ता, शुद्धता, शक्ति, मूल्य और मानक के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अधिकार

ख) खतरनाक वस्तुओं और सेवाओं से बचाव का अधिकार

ग) अनुचित या प्रतिबंधात्मक व्यापार प्रथाओं से संरक्षित किए जाने का अधिकार

घ) प्रतिस्पर्धी कीमतों पर विभिन्न प्रकार की वस्तुएं और सेवाएं प्राप्त करने का अधिकार

ङ) उचित समय पर उपभोक्ता के हित के बारे में सुने जाने और आश्वस्त किए जाने का अधिकार

च) उपभोक्ता जागरूकता संबंधी अधिकार

(3) भ्रामक विज्ञापन के लिए निषेध और जुर्माना :

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) के पास भ्रामक या झूठे विज्ञापन (जैसे लक्ष्मी धन वर्षा यंत्र) के लिए निर्माता या प्रचारक पर 2 साल तक के कारावास की सजा देने तथा जुर्माना लगाने की शक्ति होगी। बार–बार अपराध करने पर 50 लाख रुपये का जुर्माना और 5 साल तक की कैद हो सकती है।

(4) उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग :

इस अधिनियम में राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (सीडीआरसी) की स्थापना का प्रावधान है।

उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग इनसे संबंधित शिकायतों पर विचार करेगा ।

क) वस्तु या सेवा का बहुत अधिक मूल्य लिया जाना या मूल्य स्पष्ट न होना

ख) अनुचित व्यवहार या प्रतिबंधात्मक व्यापार

ग) खतरनाक वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री जो जीवन के लिए खतरनाक हो सकती है

घ) दोषपूर्ण वस्तुओं या सेवाओं की बिक्री

5. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के तहत क्षेत्राधिकार

अधिनियम ने उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (सीडीआरसी) के मानदंडों को परिभाषित किया है। राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग 10 करोड़ रुपये से अधिक की शिकायतों की सुनवाई करेगा। राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग 1 करोड़ रुपये से अधिक लेकिन 10 करोड़ रुपये से कम की शिकायतों की सुनवाई करेगा। वस्तु या सेवा का मूल्य 1 करोड़ रुपये तक होने पर जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग शिकायतों पर विचार करेगा।

6. अपराध और दंड (धारा –88 और 89) :

(1) जो कोई धारा 20 और 21 के तहत केंद्रीय प्राधिकरण के किसी भी निर्देश का पालन करने में विफल रहता है, उसे छह महीने तक के कारावास या बीस लाख रुपये तक के जुर्माने या दोनों से दंडित किया

जा सकता है।

(2) कोई भी निर्माता या सेवा प्रदाता जो झूठे या भ्रामक विज्ञापन का कारण बनता है, जो उपभोक्ता के हित के लिए हानिकारक है, उसे दो साल तक के कारावास और दस लाख रुपये तक के जुर्माने से दंडित किया जाएगा। और प्रत्येक अनुवर्ती अपराध के लिए, कारावास से, जिसकी अवधि पांच वर्ष तक की हो सकेगी और जुर्माने से, जो पचास लाख रुपए तक का हो सकेगा, दंडित किया जाएगा।

7. ई–कॉमर्स, डायरेक्ट सेलिंग आदि में अनुचित व्यापार प्रथाओं को रोकने के उपाय

ई–कॉमर्स, डायरेक्ट सेलिंग में अनुचित व्यापार प्रथाओं को रोकने और उपभोक्ताओं के हितों और अधिकारों की रक्षा में केंद्र सरकार को सक्षम बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय इस अधिनियम में निर्धारित किए गए हैं।

8. वैकल्पिक विवाद समाधान का प्रावधान :

नया अधिनियम वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र के रूप में मध्यस्थता का प्रावधान करता है, जिससे विवाद निर्णय की प्रक्रिया सरल और तेज हो जाती है। इससे विवादों के त्वरित समाधान में मदद मिलेगी और उपभोक्ताओं न्यायालयों पर दबाव कम होगा।

उपर्युक्त प्रावधानों से स्पष्ट है कि पुराने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के अधिनियम की तुलना में नया उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 डिजिटलीकृत युग में उपभोक्ता हितों की सुरक्षा करने में अधिक सक्षम है। इस अधिनियम को उद्योगों और व्यापार में हुई तकनीकी प्रगति के अनुरूप बनाया गया है।यह अधिनियम नये मीडिया का उपयोग करते हुए शिकायतों को आसानी से दर्ज करने का प्रावधान करता है और उपभोक्ताओं के हितों का उल्लंघन करने वाले प्रचारकों सहित कपटपूर्ण व्यवसायों की जवाबदेही को सख्ती से निर्धारित करता है। इसमें कोई संदेह नहीं, कि इस अधिनियम के बाद भारत के उपभोक्ता नये मीडिया का उपयोग करने में बिल्कुल नहीं घबराएंगे। उन्हें भरोसा रहेगा कि धोखाधड़ी की कोई घटना होने पर उनकी शिकायत दर्ज की जाएगी, उस पर तेजी से कार्रवाई होगी, उन्हें हुए नुकसान की भरपायी की जाएगी और अपराधियों को सख्त सजा भी मिलेगी। सबसे बढ़कर, बैंकिंग सेवाओं में नई तकनीक के उपयोग पर ग्राहकों में जो झिझक देखी जा रही थी, वह दूर होगी। अधिक से अधिक लोग वैकल्पिक भुगतान माध्यमों, इंटरनेट एवं मोबाइल बैंकिंग का प्रयोग करेंगे, जिससे आगे आने वाले समय में कम ब्याज मार्जिन के बावजूद बैंकों की लाभप्रदता निश्चित रूप से बढ़ेगी।

धर्म वीर सिंह शेखावत
मुख्य प्रबन्धक (विधि), यूको बैंक
अंचल कार्यालय,जयपुर

कहाँ गया वो बचपन सुहाना

वो रात में माँ का लोरी सुनाना
फिर रात के अँधेरे में सपनों में खो जाना
कहाँ गया वो बचपन सुहाना
वो जोर–जोर से गाने गाना
वो बेबाक बारिश में नहाना
कहाँ गया वो बचपन सुहाना
वो लड़खड़ा के गिरना फिर सम्हलना
सुकून भरे कुछ पल साथ उसके
गुजारना जरूर।
बच्चों को लगा कर गले
जब तब व्यस्त हूँ पर दूर
नहीं इक पल भी
ये जतलाना जरूर।
जड़ें कितनी भी गहरी हों
रिश्तों की सीने में
पनपते रहने की खातिर वक्त बे वक्त
इजहार की बौछार करना जरूर
नहीं भरोसा वक्त का
साथ किसी का कब छूट जाये
कोई अपना न जाने कब रूठ जाये
तबादला हो जाये दिल या दुनिया से किसी का
उससे पहले दिल की बात
पहुंचाना जरूर।
वो छोटी सी बात के लिए रोना–रुलाना
कहाँ गया वो बचपन सुहाना
वो अपने जेबखर्च पे इतराना
हर नई चीज दोस्तों को दिखाना
कहाँ ले आई है ये जवानी
अब बस है भागती जिन्दगानी
अगर यही बदलाव है
जिंदगी का ये एक पड़ाव है
तो नहीं चाहिए ये बदलाव
मुझे तो चाहिए वही सिरहाना
कहाँ गया वो बचपन सुहाना ।

मयूरी त्यागी
प्रबंधक
यूको बैंक
जयपुर

राजस्थानी महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण

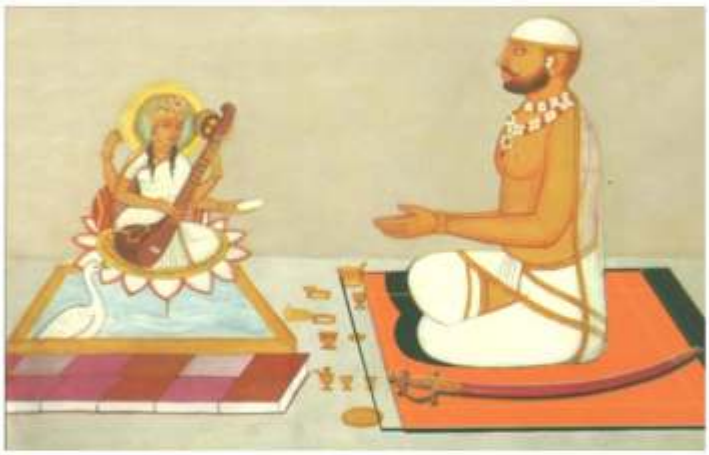

सूर्यमल्ल मिश्रण राष्ट्रीय विचारधारा तथा भारतीय संस्कृति के पुरोधा रचनाकार थे। उनको आधुनिक राजस्थानी काव्य के नवजागरण का पुरोधा कवि माना जाता है। राजस्थान के इस महान कवि का जन्म बूँदी जिले के हरणा गाँव में 19 अक्टूबर 1815 तदनुसार कार्तिक कृष्ण प्रथम वि.स. 1872 को हुआ था। इनके पिता का नाम चण्डीदान तथा माता का नाम भवानी बाई था। दोला, सुरक्षा, विजया, यशा, पुष्पा और गोविन्दा नाम की इनकी 6 पत्नियाँ थीं। सन्तानहीन होने के कारण इन्होंने मुरारीदान को गोद ले कर अपना उत्तराधिकारी बनाया था। इनके पिता भी अपने समय के प्रकाण्ड विद्वान तथा प्रतिभावान कवि थे। इनके पिता को बूंदी के तत्कालीन महाराजा विष्णु सिंह ने एक गाँव, लाख पसाव तथा कविराजा की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया था। सूर्यमल्ल मिश्रण बचपन से ही अद्भुत प्रतिभासंपन्न थे। इनकी अध्ययन में विशेष रुचि होने के कारण संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पिंगल, डिंगल आदि कईभाषाओं में इन्हें दक्षता प्राप्त हो गई। उन्होंने स्वामी स्वरूपदास से योग, वेदान्त, न्याय, वैशेषिक साहित्य आदि की शिक्षा प्राप्त की। आशानन्द से उन्होंने व्याकरण, छंदशास्त्र, काव्य, ज्योतिष, अश्ववैधक, चाणक्य शास्त्र आदि की शिक्षा प्राप्त की तथा मुहम्मद से फारसी एवं एक अन्य यवन से उन्होंने वीणा–वादन सीखा।

इस प्रकार सूर्यमल्ल मिश्रण को प्रारम्भ से ही शैक्षिक, साहित्यिक और ऐतिहासिक वातावरण मिला, जिससे उनमें विद्या, विवेक एवं वीरता का अनोखा संगम प्रस्फुटित हुआ। कवित्वशक्ति की विलक्षणता के कारण अल्पकाल में ही इनकी ख्याति चारों ओर फैल गई।

उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मातृभूमि के प्रति प्रेम, आजादी हेतु सर्वस्व लुटाने की भावना का विकास करने तथा राजपूतों में विस्मृत हो चुकी वीरता की भावना को पुनः जाग्रत करने का कार्य किया। जब 1857 का स्वाधीनता संघर्ष प्रारम्भ हुआ तो उसमे तीव्रता व वीरता पोषित करने में इस कवि की रचनाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा। सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपनी कृतियों अथवा पत्रों के माध्यम से गुलामी करने वाले शासकों को धिक्कारा था।

ये बूँदी के हाड़ा शासक महाराव रामसिंह के (विक्रमीसंवत 1872 से लेकर 1925 विक्रमी संवत तक) दरबारी कवि थे । इन्होंने बूँदी के अतिरिक्त राजस्थान और मालवे के अन्य राजाओं ने भी इनका यथेष्ट सम्मान किया। कविराजा बारहठ कृष्णसिंह ने वंश–भास्कर की उदधि–मंथिनी टीका की भूमिका में लिखा है कि महाभारत के रचनाकार महर्षि वेदव्यास के पश्चात् पिछले पांच हजार वर्षों में भारतवर्ष में सूर्यमल्ल जैसा विद्वान नहीं हुआ। अपने जीवन में ऐश्वर्य तथा विलासिता का उपभोग करने वाले इस कवि की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इनके काव्य पर इसका विपरीत प्रभाव नहीं पड़ सका है। इनकी श्रृंगारपरक रचनाएँ भी संयमित एवं मर्यादित हैं।

बूँदी नरेश रामसिंह के आदेशानुसार संवत 1897 में इन्होंने 'वंश–भास्कर' की रचना प्रारम्भ की थी। इस ग्रंथ में मुख्यतः बूँदी राज्य का इतिहास वर्णित है, किंतु यथाप्रसंग अन्य राजस्थानी रियासतों के व्यक्तियों और प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं की भी चर्चा की गई है। युद्ध–वर्णन में जैसी सजीवता इस ग्रंथ में है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। राजस्थानी साहित्य में बहुचर्चित इस ग्रंथ की टीकाकविवर बारहठ कृष्णसिंह ने की है। 'वंश–भास्कर' के कतिपय स्थल भाषाई क्लिष्टता के कारण बोधगम्य नहीं है, फिर भी यह एक अनूठा काव्य–ग्रंथ है। महाकवि सदैव सत्य का समर्थन करते थे और सत्य के लिए उन्होंने बड़े से बड़े प्रलोभन को ठुकरा दिया, फलतः उनका "वंश–भास्कर" ग्रन्थ भी अधूरा रह गया जिसे बाद में उनके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने पूर्ण किया। सूर्यमल्ल मिश्रण के वीर–सतसई ग्रन्थ को भी राजस्थान में स्वाधीनता के लिए वीरता की उद्घोषणा करने वाला अपूर्व ग्रन्थ माना जाता है।

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के नाम पर राजस्थानी भाषा का सर्वोच्च पुरस्कार राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर द्वारा सन 1985 से प्रत्येक वर्ष समिति की अनुंशसा के आधार पर दिया जाता है। इस पुरस्कार के लिए श्रीफल एवं नकद राशि रू. 71,000/– प्रदान किये जाते है। इनके द्वारा लिखित रचनाएँ प्रमुखतः है–

वंश–भास्कर, वीर–सतसई, धातु रूपावली, बलवद विलास (बलवन्त विलास), रामरंजाट, छन्दोमयूख, सतीरासो आदि है। इनके अलावा उन्होंने कुछ फुटकर छन्दों की भी रचना की है। उन्होंने वंश–भास्कर नामक पिंगल काव्य ग्रन्थ की रचना की, जिसमें बूँदी राज्य के विस्तृत इतिहास के साथ–साथ उत्तरी भारत का इतिहास तथा राजस्थान में मराठा विरोधी भावना का उल्लेख किया गया है। वे चारणों की मीसण शाखा से सम्बद्ध थे। वे वस्तुतः राष्ट्रीय–विचारधारा तथा भारतीय संस्कृति के उद्बोधक कवि थे। वीरता के सम्पोषक इस वीररस के कवि को 'वीर रसावतार' कहा जाता है।

सूर्यमल्ल की प्रतिभा और विद्वता का पता तो इस बात से ही चल जाता है कि मात्र 10 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने 'रामरंजाट' नामक खंड–काव्य की रचना कर दी थी। सूर्यमल्ल मिश्रण के प्रमुख ग्रन्थ वंशभास्कर एवं वीर सतसई सहित उनकी समस्त रचनाओं में चारण काव्य–परम्पराओं की स्पष्ट छाप अंकित है। 'वंश भास्कर' उनकी कीर्ति का आधार ग्रन्थ है। कुछ इतिहासकार इसे ऐतिहासिक दृष्टि से पृथ्वीराज रासो से भी अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। साहित्यिक दृष्टि से वंशभास्करग्रन्थ की गणना 11वीं सदी के महाभारत के रूप में की जाती है। अधूरा होते हुए भी यह लगभग तीन हजार पृष्ठों का अत्यन्त विस्तृत ग्रन्थ है। सम्भवतया इससे बड़ा ग्रन्थ हिन्दी में दूसरा कोई नहीं है। इस कृति में मुख्यतः बूंदी राज्य का इतिहास वर्णित है, किन्तु प्रसंगानुसार राजस्थान के अन्य राज्यों के राजाओं, वीरों तथा

प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओ का भी वर्णन इसमें किया गया है। इस डिंगल–पिंगल काव्य रचना में बूंदी राज्य के विस्तृत इतिहास के साथ साथ उत्तरी भारत का इतिहास तथा राजस्थान में मराठा विरोधी भावना को भी पोषित एवं सम्वर्धित किया गया है। युद्ध–वर्णन की जैसी सजीवता इस ग्रन्थ में है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। राजस्थानी साहित्य के अत्यन्त चर्चित इस ग्रन्थ की टीका कृष्णसिंह बारहट ने की है।

सूर्यमल्ल मिश्रण के वीर सतसईग्रन्थ को भी राजस्थान में स्वाधीनता के लिए वीरता की उद्घोषणा करने वाला अपूर्व ग्रन्थ माना जाता है। अपने इस ग्रन्थ के पहले ही दोहे में वे "समे पल्टी सीस" का घोष करते हुए अंग्रेजी दासता के विरुद्ध विद्रोह के लिए उन्मुख होते हुए प्रतीत होते हैं। यह सम्पूर्ण कृति वीरता का पोषण करने तथा मातृभूमि की रक्षा के लिए मरने मिटने की प्रेरणा का संचार करती है। यह राजपूती शौर्य के चित्रण तथा काव्य शास्त्र की दृष्टि से उत्कृष्ट रचना है।

प्रसिद्ध इतिहासकार मुंशी देवीप्रसाद के अनुसार इनकी मृत्यु की तिथि वि.सं. 1925 आषाढ़ कृष्णा एकादशी (30जून 1868) है जबकि अन्य इतिहासकार इनकी मृत्यु तिथि सवत 1920 बताते है ।

इस प्रकार महान इतिहासकार ने राजस्थानी भाषा के विकास के योगदान को भुलाया नही जा सकता है ।

संदर्भ : विकिपिडिया से प्राप्त स्रोत

डॉ.सुरेश कुमार
राजभाषा अधिकारी
केनरा बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर–1

समामेलन

याद आए वो पल
जो बिताये थे एक वटवृक्ष (इलाहाबाद बैंक) के नीचे
कैसे सुकुन पल थे, कैसी सुनहरी बातें थीं,
फिर वो वक्त आया, जब हुआ समामेलन
समामेलन दो परिवारों का
जो थे कुछ अलग–थलग
कुछ लोग अलग, कुछ तरीके अलग
तो था कुछ तकनीकी फरक
इस फरक ने कुछ दर्द दिए
कुछ रिश्ते टूट गए, कुछ साथी छूट गए
पर हमने साझा किए कुछ सपने,
कुछ अनुभव अपने
साझा किया विश्वास की परंपरा व आपके अपने बैंक को
साझा किया हर कदम आपके साथ
परिवर्तन प्रकृति का नियम है
इस नियम को अपनाया है
माना बहुत तंग हैं राहें, पर जंग अभी है बाकी
हर मोड़ पे, हर पल यहां
खड़े हैं कई सवाल यहां
इन सवालों के जवाबों में लगे हुए हैं सभी यहां
जमा–निकासी दृपासबुक, एफ.डी. नेफ्ट करनी है सभी
खाते लॉकर चेकबुक, देने हैं ए.टी.एम कार्ड
इण्ड ऑएसिस की क्या बात कहें, कर देता है काम कई
ऋण विभाग का क्या कहना
कहीं घर बने तो कहीं निकली कारें
इतने पर भी जी न भरा
भरते रहते असबा कई
प्रिन्टर की खिटखिट भी, अब लगती प्यारी भली
रूके नहीं हम, डटे रहें हम पूर्ण करने एकीकरण को
अपने दृढ विश्वास से ही
पूर्ण करेंगे इस समामेलन को ।

श्रीमती सीमा राठी
विशेष सहायक, अंबाबाड़ी,
इंडियन बैंक जयपुर

कोरोना के दौर में इंसान

आज कदम ठहर गए हैं तो क्या
चलो मन में दौड़ लगाते हैं।
बंद कर इन आँखों को अपनी
कुछ खुद से सवाल उठाते हैं।

क्या वाकई आईना दिखाया है कुदरत ने
या ये इंसान के कर्मों की परछाईं है।
है मालिक एक ही हम सबका
हम तो बस सेवक हैं, यही सच्चाई है।

ये जो झूठ–दिखावे और डर–फरेब का
मानव ने धरती पर जाल बिछाया है।
इस मोह–माया और नफरत की आग में जलकर
हे बुद्धिजीवी, अब तू भी नहीं बच पाया है।

देखो, आज हवा भी साफ है तो क्या
पर हम सभी के मुँह पर मास्क है।
दुश्मन दिखता भी नहीं आखों से
और बचे रहना भी बड़ी टास्क है।

सोचा नहीं था कि एक दिन सब साथ होंगे
मगर पास होकर भी यूँ दूरियाँ बढ़ जाएँगी।

पर जो न बदली स्याही इस जीवन–कलम की अब भी
तो जाने और कितनी कहानियां अधूरी रह जाएँगी।

रूपल लुहाड़िया
एस.डबल्यू.ओ.ए.
युको बैंक,चांदपोल शाखा जयपुर

तस्वीर का दूसरा रुख़

फैली थी महामारी, बिगड़े थे हालात,
तीस जुलाई बीस को जो लगा आघात , वो बताऊँ बात ।
अस्पतालों की ओर , लगी थी दौड़,
कौन पहले निपटेगा, लगी थी होड़ ।
जिस दिन मेरी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई,
उसी दिन एक चूहे ने चूहेदानी में गर्दन फंसाई ।
मैं कमरे में कैद था , चूहा चूहेदानी में मुस्तैद था ।
दोनों एक दूसरे को देखते थे,
पहले कौन निपटेगा, यही सोचते थे ।
चूहा अकेला था तो शायद वही यमराज को जंच गया,
मेरे साथ परिवार था, तो मैं बच गया ।
पन्द्रह दिनों का एकांतवास, मैंने भी भोगा ,
बाबाजी कहते, योगा से होगा ।
हुआ था कोरोना, सब कहते – डरो ना ,
ठीक हो जाओगे, बस थोड़ा वीक हो जाओगे ।
पर हर तस्वीर का दूसरा रुख भी रहता है,
थी तो महामारी, पर मेरा दिल ये कहता है ।
आई तो मारने थी, पर जीना सीखा गई,
जीवन हो सादा, स्वच्छ रहे संसार, इतना बता गई ।

नरेन्द्र प्रकाश जौहर
व्यवसाय सहायक, बैंक ऑफ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

देश मेरे... मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान

देश मेरे
मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान
तेरी मिट्टी का तिलक है मेरी शान
देश मेरे मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान

ये धरती है ऐसे वीरों की
जो हंसते हुए फांसी पे झूले
ये धरती है ऐसे वीरों की
जो वतन के लिए अपने खून से खेले
सपूत थे वो ऐसे ,
जो अन्तिम सांस तक
करते रहे भारत माता का गान
देश मेरे मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान

मुकद्दर है मेरा कितना अच्छा
कर्म है मेरा कितना सच्चा।
जो जन्म लिया तेरी गोद में
जिन्दगी गुजरी तेरे आंचल में।
हैं सबसे खुशनसीब हम इस जहां में
जो सांसें मिली तेरे आसमां में।
देश मेरे मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान

सत्य अहिंसा की तेरी खुशबू
बसा लूं मेरी सांसों में।
बारम्बार शीश झुकाऊं
मैं तेरे चरणों में।
तू है हमारी शान
देश मेरे मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान

आवाज़ में है सच्चाई का ज़ोर
भारत माता की जयकार है चारों ओर
रग रग बूंद बूंद जय हिन्द बोले
ले तिरंगा हम अभिमान से झूमें।
आंच ना आने देंगे तिरंगे पे
जो है हमारी पहचान।
पड़ने ना देंगे दुश्मन के कदम इस धरती पे
जो है हमारी आन।
देश मेरे मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान

शांति सहनशीलता को हमारी कमज़ोरी मत समझना
संस्कार नहीं हमारे कमजोरों को आंख दिखाना।
रोकना चाहा था जिसने परमाणु शक्ति बनने से
आज वही हमारा साथ पाने को पीछे पड़े हैं
भारत है मेरा गर्व
भारत है मेरा स्वाभिमान।
देश मेरे मैं हो जाऊं तुझपे कुर्बान।

क्या सच में आपको अपनों से प्यार है ?

क्या सोच में पड़ गए हैं? गुस्सा आ रहा कि ये कैसा सवाल है? मैं तो बहुत प्यार करता हूं अपनों से। मैं तो कुछ भी कर सकता हूं अपनों के लिए। माता पिता कहेंगे हम तो बहुत प्यार करते हैं अपने बच्चों से। अपने बच्चों के लिए ही जी रहे हैं हम तो। हर पल उनकी हंसी उनकी खुशी के लिए सोचते हैं। यही जवाब बच्चों का होगा अपने माता पिता के लिए। भाई का अपनी बहन के लिए, बहन का भाई के लिए और ऐसे सभी अपनों के लिए को हमारी जिंदगी का जरूरी हिस्सा है। पत्नी पति के लिए करवा चौथ रखती है। ऐसे ही पति अपनी पत्नी के लिए बहुत कुछ करता है। सबका एक ही जवाब होगा– हां हम तो बहुत प्यार करते हैं अपनों से। ये कैसा फालतू सवाल है? लेकिन कभी सोचा है जब सड़क पर तेज़ रफ्तार से गाड़ी चलाते हैं, शराब पीकर गाड़ी चलाते हैं, लापरवाही से, खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाते हैं इसका क्या नतीजा हो सकता है? जब यातायात नियमों को तोड़ते है, बिना हेलमेट गाड़ी चलाते हैं , इसका नतीजा क्या हो सकता है। क्यूं भूल जाते है हमारी एक गलती से हमारे अपनों की जिंदगी एक पल में तबाह हो जाएगी। हमेशा के लिए उनकी हंसी छीन जाएगी। दुःखों के बादलों से घिर जायेंगे । एक पल में सब खुशियां खत्म हो जायेगी। एक गलती का एक पल हमेशा के लिए एक परिवार से जिंदगी छीन लेता है।

क्या तेज़ रफ्तार अपनों से ज्यादा जरूरी है? क्या अपनों से ज्यादा शराब प्यारी है? क्या हेलमेट का बोझ अपनों के आंसुओं से भी भारी है? अब एक बार फिर से अपनों को याद करिये और सोचिये उनके लिए जो आपका घर पर इंतजार कर रहे हैं और पूछिए खुद से ये सवाल क्या मैं सच में उनसे प्यार करता हूं? क्या सच में मुझे अपनों कि परवाह है? क्या मैं धीरे गाड़ी नहीं चला सकता, शराब पीकर गाड़ी चलाना छोड़ नहीं सकता? क्या हेलमेट लगाके गाड़ी नहीं चला सकता? क्या इतने मुश्किल हैं ये नियम जिन्हें मैं अपना नहीं सकता। हर रोज यही खबरें आती है आज किसी का बेटा, किसी का पिता , किसी का भाई, किसी की बेटी, किसी की मां , किसी की बहन गाड़ी से कुचल गई। कोई आज अपने घर नहीं पहुंच पाया। किसी का इंतज़ार कभी खत्म ना होने वाला इंतज़ार बन गया। ये सब होता है हमारी एक गलती से एक लापरवाही से।

क्या इन हादसों को हम रोक नहीं सकते? जरूर रोक सकते है, बस कुछ छोटे छोटे नियमों को अपना लें। आगे से जब भी लापरवाही से गाड़ी चलाएं एक बार जरूर सोचिएगा उनके लिए जिनसे आप प्यार करते हैं, जो आपसे प्यार करते हैं, जो आपका घर पर इंतज़ार कर रहे है, जिनके सपने आपसे जुड़े हुए हैं, जिनकी जिंदगी आप से है। आप की लापरवाही आपका और किसी और का परिवार खत्म कर सकती है। याद करिएगा अपने बच्चो का चेहरा , अपने माता पिता का चेहरा, अपने पति या अपनी पत्नी का चेहरा , अपने भाई बहन का चेहरा।

लेखक– प्रमोद सैनी
भारतीय स्टेट बैंक, जयपुर

भारतीय गीतकारी का नया अर्श : मनोज 'मुन्तशिर'

क्या आपने कभी सोचा है कि एक अच्छे अभिनेता और गीतकार की पैमाइश क्या होती है? यह कि वो उन भावों को भी अपने चेहरे और कागज पर उतारने में सफल हो जाते हैं जो उनके भीतर शायद न भी हों। भारतीय फिल्म जगत के ख्यातनाम गीतकारों की सूची में ऐसे ही कई नाम हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से हजारों गीतों को शब्द दिए हैं और करोड़ों दिलों ने जिनके लिखे गीतों को गुनगुनाया है। गीतकार सलीम, जावेद–अख्तर, प्रसून जोशी, इरशाद कामिल जैसे कुछ ऐसे ही नाम हैं जिन्होंने शब्दों की बाजीगरी के बल पर इस सितारा जगत में अपना अलग वजूद बनाया है और बरसों तलक ये भारतीय फिल्म उद्योग के फलक पर छाए रहे हैं। लेकिन, पिछले कुछ सालों में जिस एक गीतकार ने चालू टाइप फिल्मी गीतों से अलग अपनी एक अलहदा गीत–शैली से सबको अपना मुरीद बना लिया है,जिसका लिखा हर एक नया गीत श्रोताओं की जुबां पर चढ़ जाता है,युवा गीतकारों की फेहरिस्त में आज के दौर में सबसे ऊपर जिसका नाम आता है, वो है मनोज मुन्तशिर। मनोज के गीतों की खासियत है उनका अंदाजे–बयां।

वो बड़े ही सादगी भरे अल्फाजों से इतना कुछ कह जाते हैं कि उनके गीत सीधा लबों से दिलों में उतर जाते हैं। इससे भी बड़ी बात यह है कि वो गीत–लेखन की हर विधा में माहिर है,चाहे वो 'तेरी मिट्टी' जैसा देशभक्ति का जज्बा जगाने वाला तराना हो,"मैं फिर भी तुमको चाहूँगा" जैसी प्यार में अंतहीन हद तक डूबे हुए प्रेमी की जिद हो या फिर "वो चाँद कहाँ से लाओगे" जैसी टूटे हुए दिल से निकली कोई बददुआ हो, मनोज वाकई गीतकारी के हर फन के मौला हैं। जब बात वात्सल्य की आती है तो "माँ" पर लिखी उसकी इन नायाब पंक्तियों की खूबसूरती देखिए :

"खुदा ने जब पहली बार मां को बनाया,फिर वह बहुत पछताया,
क्योंकि खुदा का काम था मोहब्बत, वह मां करने लगी।
खुदा का काम था हिफाज़त, वह मां करने लगी,
और खुदा का काम था बरकत, वह भी मां करने लगी।
देखते ही देखते उसके सामने कोई और परवरदिगार हो गया,
वो बहुत मायूस हुआ, बहुत रोया, क्योंकि मां को बनाकर खुदा बेरोजगार हो गया"

लेकिन मनोज आज अपनी जिस लेखनी की बदौलत सफलता के नए–नए गीत रच रहे हैं, फिल्मी दुनिया में इस मुकाम तक पहुँचने का राइटर मनोज मुंतशिर का सफर भी किसी फिल्मी कहानी सरीखा ही है। यूपी के अमेठी में जन्मे मनोज बचपन से ही उर्दू सीखना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने एक मस्जिद के नीचे से उर्दू की किताब खरीदी। उसमें हिंदी के साथ उर्दू लिखी थी। उस किताब ने उनकी जिंदगी बदल डाली और वह उर्दू में शायरी लिखने लगे। करीब डेढ़ साल मुंबई के अंधेरी में रातें फुटपाथ पर काटीं। कई दिनों तक भूखे भी रहना पड़ा। लेकिन सदी के महानायक अमिताभ बच्चन से हुई एक मुलाकात ने मनोज का जीवन ही बदल दिया।

मनोज बताते हैं "16 साल पहले स्टार टी.वी के एक अधिकारी ने मेरा काम देखा था, एक दिन उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा कि अमिताभ बच्चन से मिलोगे। वो मेरे संघर्ष के दिन थे, तो मुझे लगा कि मजाक हो रहा है। फिर वो मुझे एक होटल ले गए, जहां मेरी मुलाकात अमिताभ बच्चन से हुई। 20 मिनट की मीटिंग के बाद मेरा सलेक्शन हुआ और साल 2005 में कौन बनेगा करोड़पति के लिए लिरिक्स लिखने का मौका मिला"। (संदर्भ : अमर उजाला) बस यहाँ से मनोज ने मुड़कर नहीं देखा और अभी तक वे तीन दर्जन से अधिक फिल्मों के गाने और डायलॉग लिख चुके हैं जिसमें बाहुबली जैसी फिल्म भी शामिल है।

मनोज के लिखे गीतों की सबसे बड़ी बात है उनमें उर्दू से ज्यादा हिन्दी के शब्दों का इस्तेमाल। हाल के दौरान में इरशाद कामिल जैसे काबिल गीतकार भी हुए हैं जिन्होंने उर्दू के जादुई अल्फाजों की बदौलत ऐसे–ऐसे नगमे लिख डाले हैं जिनके एक–एक शब्द ऐसे है जैसे गहरे समुद्र से बेशकीमती मोती ढूँढ कर लाए गए हों। लेकिन इन नगमों की गहराई वही समझ सकता है जिसे उर्दू शब्दावली का ज्ञान हो या साहित्य जिनकी रगों में लहू बनकर बहता हो,जिन्हें समझना आम श्रोता के बस का नहीं। किन्तु मुंतशिर की तो शैली ही ऐसी है कि उसके गीत आम से लेकर खास तक, फूटपाथ से लेकर कोठी तक सबके दिल में आसानी से उतर जाते हैं, उन्हें सुनकर लगता है जैसे ये गीत उन्हीं की कहानी बयां कर रहे हों। फिल्म धोनीः द अनटोल्ड स्टोरी का "कौन तुझे यूं प्यार करेगा" गीत उसी की बानगी है।

मैंने यहाँ जानबूझकर 'सुनकर' शब्द का इस्तेमाल किया है जबकि मुझे मालूम है कि ये गीत मनोज द्वारा लिखे गए हैं, गाये नहीं गए। किन्तु, ये एक जहीनलेखक की छाप ही है कि अब जब भी हम कोई नया गीत सुनते हैं तो उनके द्वारा लिखे गए गीत की पहचान अपने आप हो जाती है। जब आप लेखक का नाम पता करते हैं तो नाम 'मुंतशिर' आता है। इसीलिए तो जब गीतकार मनोज अपने हालिया गाने "वो चाँद कहाँ से लाओगी" के आखिरी अंतरे में कहते हैं कि, "सिर्फ मेरा टूटना काफी नहीं है, तुमको भी तो मुन्तशिर होना पड़ेगा", संदर्भ भले ही अलग हो लेकिन जब भी हम मनोज को पढ़ते और सुनते हैं,तो लगता है उनके शब्दों की गहराई को समझने के लिए 'मुन्तशिर" होना वाकई एक अहम 'शर्त' है।

जयपाल सिंह शेखावत
वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
बैंक ऑफ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

साहित्य निर्झर-18

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकारों को समर्पित ज्ञान-श्रृंखला

भवानी प्रसाद मिश्र

तुम कागज पर लिखते हो
वह सड़क झाड़ता है
तुम व्यापारी
वह धरती में बीज गाड़ता है ।

– भवानी प्रसाद मिश्र

'जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख,और इसके बाद भी हम से बड़ा तू दिख'

कुछ इस तरह ताल ठोंककर कवियों को नसीहत देने वाले हिन्दी के प्रसिद्ध कवि तथा गांधीवादी विचारक भवानी प्रसाद मिश्र उन गिने चुने कवियों में थे जो कविता को ही अपना धर्म मानते थे और आम जनों की बात उनकी भाषा में ही रखते थे। उनकी बहुत सारी कविताओं को पढ़ते हुए महसूस होता है कि कवि आपसे बोल रहा है, बतिया रहा है। जहाँ अपनी 'गीतफरोश' कविता में कवि ने अपने फिल्मी दुनिया में बिताये समय को याद कर कवि के गीतों का विक्रेता बन जाने की विडम्बना को मार्मिकता के साथ कविता में ढाला है वहीं 'सतपुड़ा के जंगल' जैसी कविता सुधी पाठकों को एक अछूती प्रकृति की सुन्दर दुनिया में लेकर चलती है।.उनकी कविताएँ गेय हैं और पाठकों को ताउम्र स्मरण रहती हैं।वे गूढ़ बातों को भी बहुत ही आसानी और सरलता के साथ अपनी कविताओं में रखते थे। नई कविताओं में उनका काफी योगदान है। उनका सादगी भरा शिल्प अब भी नये कवियों के लिए चुनौती और प्रेरणास्रोत है। वस्तुतरू वे कवियों के कवि थे।

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म गाँव टिगरिया, तहसील सिवनी मालवा, जिला होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में में हुआ। कविताएँ लिखना लगभग 1930 से ही नियमित रूप से प्रारम्भ हो गया था और कुछ कविताएँ पं० ईश्वरी प्रसाद वर्मा के सम्पादन में निकलने वाले हिन्दूपंच में हाईस्कूल पास होने के पहले ही प्रकाशित हो चुकी थीं। सन 1932–33 में वे माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पर्क में आये। चतुर्वेदी जी आग्रहपूर्वक कर्मवीर में उनकी कविताएँ प्रकाशित करते रहे। हंस में भी उनकी काफी कविताएँ छपीं उसके बाद अज्ञेय जी ने 'दूसरा सप्तक' में उन्हें प्रकाशित किया। 'दूसरा सप्तक' के बाद प्रकाशन क्रम ज्यादा नियमित होता गया। वे 'दूसरा सप्तक' के प्रथम कवि रहे। उनका प्रथम संग्रह 'गीत–फ़रोश' अपनी नई शैली, नई उद्भावनाओं और नये पाठ–प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ। प्यार से लोग उन्हें भवानी भाई कहकर सम्बोधित किया करते थे।

प्रमुख कृतियाँ

कविता संग्रह– गीत फरोश, चकित है दुख, गान्धी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, त्रिकाल सन्ध्या, व्यक्तिगत, परिवर्तन जिए, तुम आते हो, इदम् न मम, शरीर कविता : फसलें और फूल, मानसरोवर दिन, सम्प्रति, अँधेरी कविताएँ, तूस की आग, कालजयी, अनाम, नीली रेखा तक और सन्नाटा।

बाल कविताएँ – तुकों के खेल, संस्मरण – जिन्होंने मुझे रचा, निबन्ध संग्रह – कुछ नीति कुछ राजनीति।

सम्मान

भवानी भाई को 1972 में उनकी कृति बुनी हुई रस्सी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1981–82 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का साहित्यकार सम्मान दिया गया तथा 1983 में उन्हें मध्य प्रदेश शासन के शिखर सम्मान से अलंकृत किया गया।

संकलन – राजभाषा विभाग
अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय,
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जयपुर

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर के सदस्य बैंकों के संपर्क विवरण

क्र.	सदस्य बैंक का नाम एवं पता	कार्यालय प्रमुख	राजभाषा प्रभारी
1	बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, 13, एयरपोर्ट प्लाजा, दुर्गापुरा, टोंक रोड, जयपुर	श्री महेन्द्र एस महनोत, अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक दूरभाष : 0141-2727101	श्री सोमेन्द्र यादव, मुख्य प्रबंधक दूरभाष : 0141–2727130, 8347899585
2	भारतीय रिज़र्व बैंक, रामबाग सर्किल, जयपुर	श्री अरुण कुमार सिंह, क्षेत्रीय निदेशक दूरभाष : 0141-5110331	श्री लुईस होरो, प्रबंधक दूरभाष : 0141–2577952, 9746966444
3	नाबार्ड, राष्ट्रीय कृषि विकास बैंक, 3, नेहरू प्लेस, लाल कोठी, टोंक रोड, जयपुर	श्री जयदीप श्रीवास्तव, मुख्य महाप्रबंधक, दूरभाष : 8004445060	श्री अरविन्द पारीक सहायक महाप्रबंधक : 9829972282
4	पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, 2 नेहरू प्लेस, टोंक रोड, जयपुर	श्री बी.पी. महापात्र, महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2743349	श्रीमती कृष्णा शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक दूरभाष : 0141–2747048, 8890001362
5	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, 1-ऑर्बिट मॉल, सिविल लाइंस मेट्रो स्टेशन के पास, अजमेर रोड, जयपुर-302006	श्री पुरुशोत्तम चंद, महाप्रबंधक दूरभाष : 0141-2222944, मो.: 7073904229	श्री ललित कुमार जांगिड़, प्रबंधक, दूरभाष:0141-2224907, मो.: 8003200896,7755927955
6	आई.डी.बी.आई बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, शोरूम नं. 2 व 3 सन्नी पैराडाईज, कमल एण्ड कंपनी के पास, टोंक रोड़, जयपुर	श्री अंकुर दूबे, महाप्रबंधक एवं वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रमुख दूरभाष : 0141–4133500	कैलाश सांवरिया, सहायक महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–4133515
7	सिडबी, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, भूतल, ड्रीमएक्स प्लाजा, सहकार मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर - 302015	श्री बलवीर सिंह, महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2744002, 8511104774	श्री वेद मखीजा, प्रबंधक, दूरभाष: 0141-5119039 मो. 8764064618
8	बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, 13, एयरपोर्ट प्लाजा, दुर्गापुरा, टोंक रोड, जयपुर	श्री एस.के. बंसल, उप महाप्रबंधक, दूरभाष : 0141-2727150 मो. 9414068400	श्री जयपाल सिंह शेखावत, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) दूरभाष : 0141-2727191, मो. 9950393161
9	भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, ए-5, नेहरू प्लेस, टोंक रोड, जयपुर	श्री अनुराग कुमार, उप–महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2745102, 9425393001	श्री नीरज शर्मा, प्रबंधक दूरभाष : 8527600366
10	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, किसान भवन, लाल कोठी, टोंक रोड, जयपुर	श्री ओमप्रकाश करवा, उप–महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–412744670, 9833697256	श्रीमती सोनिया चौधरी, सहायक प्रबन्धक, दूरभाष : 9560622690
11	बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, स्टार हाऊस, बी-4,सेक्टर 2, जवाहर नगर, जयपुर	श्री वैभव आनन्द, उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख मोबाइल : 9672995824	श्री भागेश कलोरिया, प्रबंधक दूरभाष: 0141-2658030, मो. 9724691351
12	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आनंद भवन, प्रथम तल, संसार चंद्र रोड, जयपुर	श्री एम एस अख्तर, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक दूरभाष : 0141–2371525, 7667536891	श्री पी. ए. गौड़, प्रबंधक, दूरभाष : 9828156287
13	इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, जेटीएम, एसएफ़ 50, जगतपुरा फ्लाईओवर के पास, मॉडल टाउन, मालवीय नगर, जयपुर	श्री जगदीश प्रसाद, अंचल प्रबंधक दूरभाष : 0141–23744317, 9558645304	श्रीमती विमला मीना, वरिष्ठ प्रबंधक, मो. 70733888126
14	यूको बैंक, अंचल कार्यालय, आर्केड इंटरनेशनल, ऑरबिट मॉल, अजमेर रोड, जयपुर	श्री प्रेम शंकर झा, उप महाप्रबंधक दूरभाष : 0141–2225617, 8877656560	डॉ सुधीर कुमार साहु, मुख्य प्रबंधक, मो. 9748006526
15	इंडियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय एसबी-57, प्रथम तल, रिद्धि टॉवर, बापू नगर, टोंक रोड, जयपुर	श्री रंजन कुमार मिश्रा , वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक दूरभाष : 0141–4032708, 9962884626	श्रीमती पदमा चाँदवानी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), दूरभाष 0141-4032940, मो. 9098214614
16	बैंक ऑफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, फोर्च्यून हाईट्स बिल्डिंग, छठा तल, अहिंसा सर्किल, सी-स्कीम, जयपुर	श्रीमती संतोष दुलड़, सहायक महाप्रबंधक (अंचल प्रमुख) दूरभाष : 0141–2379903, 9309012192	श्रीमती अन्नु शर्मा, प्रबंधक, दूरभाष: 9650137812
17	पंजाब एंड सिंध बैंक,आंचलिक कार्यालय, 30-31 मोहन टॉवर, प्रिंस रोड, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, जयपुर	श्री सुनील गेरा, आंचलिक प्रबंधक दूरभाष : 0141–2358628, 9891954006	श्री महेंद्र कुमार मीणा, राजभाषा अधिकारी, दूरभाष: 7055633555, मो. 9462563161

बैंक नराकास, जयपुर की उप-समितियों की बैठक

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर द्वारा दिनांक 26.04.2021 को एम एस टीम्स के माध्यम से सभी सदस्य कार्यालयों के राजभाषा प्रभारियों हेतु बैठक आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता श्री योगेश अग्रवाल, समिति उपाध्यक्ष, बैंक नराकास, जयपुर ने की। उक्त बैठक में समिति के कुल 17 सदस्य कार्यालयों के राजभाषा प्रभारी उपस्थित रहे । बैठक का संचालन नराकास सदस्य सचिव श्रीमती प्रीति राउत, वरिष्ठ प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा किया गया।

दिनांक 25.05.2021 को श्री सीताराम गुप्ता, मुख्य प्रबंधक, पंजाब नेशनल बैंक की अध्यक्षता तथा श्री बी.एस.पाल, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक के मार्गदर्शन में प्रतियोगिता एवं गतिविधियों संबंधी उप समिति की ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। बैठक का संचालन सुश्री पूर्णिका शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (पंजाब नेशनल बैंक) व संयोजक, प्रतियोगिता एवं गतिविधियों संबंधी उप-समिति ने किया।

दिनांक 08.06.2021 को श्री विनोद मोंगा, सहायक महाप्रबंधक एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, जयपुर क्षेत्र की अध्यक्षता एवं सुश्री प्रीति राउत, सदस्य सचिव व वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ बड़ौदा के मार्गदर्शन में बैंक नराकास, जयपुर की प्रकाशन उप समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में उप समिति के सदस्य बैंक- नाबार्ड, इंडियन बैंक, केनरा बैंक एवं बैंक ऑफ महाराष्ट्र के राजभाषा प्रभारियों ने भाग लिया। बैठक का संचालन श्री जयपाल सिंह शेखावत, संयोजक (प्रकाशन उप समिति) एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ बड़ौदा ने किया।

नराकास जयपुर के सदस्य बैंक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA

नाबार्ड
राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

यूनियन बैंक
Union Bank of India
आन्ध्रा Andhra

बैंक ऑफ़ इंडिया
Bank of India
Relationships beyond banking.

इंडियन बैंक
Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

केनरा बैंक Canara Bank
सिंडिकेट Syndicate

बैंक ऑफ महाराष्ट्र
Bank of Maharashtra
भारत सरकार का उद्यम
एक परिवार एक बैंक

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
Indian Overseas Bank
आपकी प्रगति का सच्चा साथी
Good people to grow with

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

भारतीय स्टेट बैंक
State Bank of India
हर भारतीय का बैंक
THE BANKER TO EVERY INDIAN

सिडबी

IDBI BANK

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)
Where service is a way of life

पंजाब नैशनल बैंक
punjab national bank